Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 06 ● वर्ष : 13 ● रायपुर, शुक्रवार 13 जून 2025 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

स्वरूप का भान नहीं होने देने वाली कषाय है।

Hindrance Knows one's own form is passion.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

अहमदाबाद विमान हादसे में पूर्व मुख्यमंत्री रूपाणी समेत 241 लोगों की मौत, केवल एक यात्री जिंदा बचा

डीएनए सैंपल से की जाएगी शवों की पहचान, मृतकों के परिवारों को 1 करोड़ का मुआवजा देगा टाटा ग्रुप

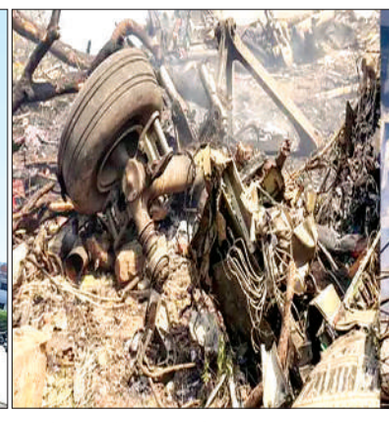

अहमदाबाद (आरएनएस)। गुजरात के अहमदाबाद में हुए विमान हादसे में 241 लोगों की मौत हो गई है और केवल एक यात्री जिंदा बचा है। विमान में कुल 242 यात्री और चालक दल के सदस्य सवार थे। हादसे में कई शव पूरी तरह जल गए हैं, जिनकी पहचान डीएनए के जरिए की जाएगी।

एयर इंडिया का विमान उड़ान भरते ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। एयर इंडिया का यह विमान अहमदाबाद से लंदन जा रहा था। विमान ने आज सुबह दिल्ली से अहमदाबाद के लिए उड़ान भरी थी। अहमदाबाद में कुछ घंटे के लेओवर के बाद विमान को लंदन के लिए रवाना होना था। विमान डॉक्टरों के हॉस्टल से टकराया है, जिसकी वजह से कई डॉक्टर भी घायल हुए हैं।

एयर इंडिया के मुताबिक, विमान में 230 यात्री, 10 चालक दल के सदस्य और 2 पायलट सवार थे। यात्रियों में से 169 भारतीय नागरिक, 53 ब्रिटिश नागरिक, एक कनाडाई नागरिक और 7 पुर्तगाली नागरिक हैं।

विमान में गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी भी सवार थे। उन्हें 2डी सीट मिली थी, जिसका टिकट भी सामने आया है। हादसे में पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी का भी निधन हो गया है। भाजपा के राज्यसभा सांसद परिमल नाथवानी ने एक्स पर यह जानकारी दी। हालांकि कुछ देर बाद उन्होंने अपनी पोस्ट डिलीट कर दी।

हादसे के बाद एयर इंडिया ने हेल्पलाइन नंबर (1800-5691-444) जारी किया है।

एयर इंडिया का विमान बीजे मेडिकल कॉलेज के छात्रावास पर गिरने से 5 छात्रों की मौत

गुजरात के अहमदाबाद हवाई अड्डे से उड़ान भरने वाला एयर इंडिया का एआई171 विमान बीजे मेडिकल कॉलेज के छात्रावास पर दुर्घटनाग्रस्त हुआ, जिससे 5 मेडिकल छात्रों की जान चली गई। विमान ने दोपहर को 1:38 बजे सरदार वल्लभ भाई पटेल हवाई अड्डे से उड़ान भरी थी और कुछ मिनट बाद छात्रावास से टकरा गया। हादसे में 27 छात्र घायल हैं। हादसे के समय छात्रावास में छात्र दोपहर का खाना खाने जुटे थे। मृतकों में स्नातक और स्नातकोत्तर छात्र शामिल हैं।

हादसे में बचे यात्री का नाम रमेश विश्वास कुमार बताया जा रहा है। वे सीट नंबर 11ए पर बैठे थे। विश्वास को सीने, आंख और पैरों में चोट आई हैं। उनका इलाज अहमदाबाद के असरवा स्थित सिविल अस्पताल में चल रहा है। उन्होंने कहा, उड़ान भरने के 30 सेकंड बाद एक जोरदार आवाज हुई और फिर विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। मुझे होश आया तो मेरे अगल-बगल लाशें ही लाशें थी। मुझे किसी ने उठाया और एंबुलेंस में डाल दिया।

घटना पर टाटा समूह के अध्यक्ष एन चंद्रशेखरन ने कहा, हमारी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं उन परिवारों के साथ हैं, जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है और जो घायल हुए हैं। टाटा समूह जान गंवाने वाले प्रत्येक व्यक्ति के परिवार को 1 करोड़ रुपये की सहायता राशि देगा। हम घायलों का चिकित्सा खर्च भी वहन करेंगे और सुनिश्चित करेंगे कि उन्हें सभी आवश्यक देखभाल और सहायता मिले। इसके अलावा हम बीजे मेडिकल के छात्रावास के निर्माण में सहायता प्रदान करेंगे।

यह शब्दों से परे हृदय विदारक घटना: पीएम मोदी

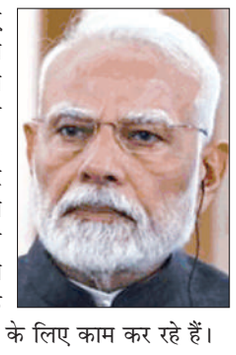

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अहमदाबाद में हुए एयर इंडिया विमान हादसे पर गहरा दु:ख व्यक्त किया है और इस घटना को शब्दों से परे हृदय विदारक बताया है। प्रधानमंत्री मोदी ने गुरुवार को एक्स पर एक पोस्ट में कहा, अहमदाबाद में हुई त्रासदी ने हमें स्तब्ध और दुखी कर दिया है। यह शब्दों से परे हृदय विदारक है। इस दु:ख की घड़ी में, मेरी संवेदनाएं इससे प्रभावित सभी लोगों के साथ हैं। मैं उन मंत्रियों और अधिकारियों के संपर्क में हूं जो प्रभावित लोगों की सहायता के लिए काम कर रहे हैं।

शब्दों में बयां नहीं कर सकता: गृहमंत्री अमित शाह

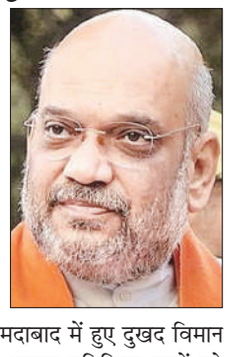

गृह मंत्री अमित शाह दिल्ली से अहमदाबाद पहुंच गए हैं। उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू भी उनके साथ हैं। अहमदाबाद में एयर इंडिया के विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने पर गृह मंत्री अमित शाह का बयान आया है। उन्होंने हादसे पर दुख जताते हुए कहा कि विमान हादसे को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है। अमित शाह हादसे की खबर पाकर अहमदाबाद पहुंचे। उन्होंने गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल से हादसे की जानकारी ली है। अमित शाह ने हादसे को लेकर एक्स पर लिखा, अहमदाबाद में हुए दुखद विमान हादसे से मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकता। आपदा प्रतिक्रिया बलों को तुरंत दुर्घटनास्थल पर भेज दिया गया है। स्थिति का आकलन करने के लिए गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल, गृह मंत्री हर्ष संघवी और अहमदाबाद के पुलिस आयुक्त से बात की। अमित शाह ने केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री से भी बात की है। वह हालात का जायजा ले रहे हैं। हादसे पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू किंजरापू समेत कई लोगों ने शोक जताया है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टॉर्मर का भी बयान सामने आया है। उन्होंने लिखा, लंदन जा रहे एक विमान के अहमदाबाद में दुर्घटनाग्रस्त होने के दृश्य बहुत ही भयावह हैं।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने विमान दुर्घटना पर जताया गहरा शोक

राज्यपाल रमेन डेका ने गहरा शोक व्यक्त किया

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने गुजरात के अहमदाबाद में हुई विमान दुर्घटना को अत्यंत हृदयविदारक और दुखद घटना बताया है। उन्होंने इस भीषण दुर्घटना में मृत यात्रियों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की है। मुख्यमंत्री ने दिवंगत आत्माओं की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना करते हुए उनके परिजनों को इस दुख की घड़ी में संबल और शक्ति प्रदान करने की कामना की है।

राज्यपाल श्री रमेन डेका ने अहमदाबाद से लंदन जा रहे एयर इंडिया के यात्री विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने एवं यात्रियों की मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त किया है। राज्यपाल रमेन डेका ने हादसे को अत्यंत पीड़ा दायक बताते हुए दिवंगत यात्रियों के प्रति अपनी संवेदना प्रगट की है। राज्यपाल ने कहा कि इस दुर्घटना में जान गंवाने वाले सभी मृतात्माओं को ईश्वर शांति प्रदान करें एवं उनके परिजनों को इस विकट परिस्थिति में धैर्य एवं संबल प्रदान करें। श्री डेका ने घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की है।

अहमदाबाद एयर इंडिया दुर्घटना दिल दहलाने वाली : राहुल गांधी

नई दिल्ली (ए)। कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने एक्स पर लिखा, अहमदाबाद एयर इंडिया दुर्घटना दिल दहलाने वाली है। यात्रियों और चालक दल के परिवारों को जो दर्द और चिंता हो रही होगी, वह अकल्पनीय है। इस अविश्वसनीय रूप से कठिन क्षण में मेरी संवेदनाएं उनमें से प्रत्येक के साथ हैं। प्रशासन द्वारा तत्काल बचाव और राहत प्रयास महत्वपूर्ण हैं। हर जीवन, हर सेकंड मायने रखता है। कांग्रेस कार्यकर्ताओं को मदद करने के लिए हरसंभव प्रयास करना चाहिए।

जे.पी. नड्डा ने दुर्घटना को बेहद दु:खद बताया : भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री जे.पी. नड्डा ने दुर्घटना को बेहद दु:खद बताया और कहा कि वे राहत प्रयासों की निगरानी के लिए राज्य के नेताओं के संपर्क में हैं। मैंने स्वास्थ्य सेवा व्यवस्था और राहत कार्यों पर अपडेट प्राप्त करने के लिए गुजरात भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री सी.आर. पाटिल और स्वास्थ्य मंत्री रुशिकेश पटेल से बात की।

ईडी ने 2700 करोड़ की रियल एस्टेट धोखाधड़ी मामले में छापेमारी की, 24 ठिकानों पर एक साथ छापेमारी

जयपुर (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने गुरुवार को एक रियल एस्टेट स्कीम से जुड़े 2,700 करोड़ रुपये के मनी लॉन्ड्रिंग मामले में बड़ी कार्रवाई की। ईडी ने दिल्ली, राजस्थान और गुजरात में लगभग 24 ठिकानों पर एक साथ छापेमारी की।

एजेंसी सूत्रों के मुताबिक, यह जांच रेड नेक्सा एवरग्रीन नाम की एक रियल एस्टेट स्कीम से जुड़ी है, जिसमें बड़े पैमाने पर वित्तीय धोखाधड़ी हुई है। राजस्थान में ईडी की टीमों ने जयपुर, जोधपुर, सीकर और झुंझुनू जैसे शहरों में छापेमारी की। इसके अलावा, अहमदाबाद (गुजरात) और दिल्ली के कुछ इलाकों में भी एक साथ छापे मारे गए। यह पूरी कार्रवाई धन शोधन निवारण अधिनियम के तहत की जा रही है।

रेड नेक्सा एवरग्रीन प्रोजेक्ट ने लोगों को ज्यादा मुनाफे या प्रॉपर्टी देने के वादे करके निवेश के लिए लुभाया था, जैसे फ्लैट, जमीन या एक तय समय के बाद ज्यादा रिटर्न देने की बात कही गई थी। आरोप है कि इस स्कीम के जरिए बड़ी संख्या में निवेशकों से ठगी की गई।

इससे पहले राजस्थान पुलिस ने इस धोखाधड़ी में शामिल कई लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की थी। अब ईडी की जांच का मकसद इस घोटाले में पैसे के लेन-देन का पता लगाना और मुख्य लाभ उठाने वालों की पहचान करना है।

जांच अभी जारी है और उम्मीद है कि तलाशी पूरी होने पर और भी जानकारी सामने आएगी। राजस्थान, गुजरात और दिल्ली में लगभग 24 जगहों पर छापेमारी की जा रही है। इस परियोजना में निवेशकों को तय समय तक पैसा लगाने के लिए लुभाया गया था। उनसे वादा किया गया था कि निवेश के बदले में उन्हें प्लॉट या फ्लैट दिए जाएंगे। लेकिन आरोप है कि ये वादे पूरे नहीं किए गए और निवेशकों को धोखा दिया गया।

2027 की जनगणना होगी डिजिटल

मोबाइल ऐप से जुटाए जाएंगे जातीय समेत सभी आंकड़े

नई दिल्ली (आरएनएस)। केंद्र सरकार अगले साल जनगणना करने जा रही है, जिसमें पहली बार जातियों का भी आंकड़ा एकत्र किया जाएगा। इसके साथ ही 2027 की जनगणना एक और वजह से खास होगी, क्योंकि यह पूरी तरह डिजिटल प्रक्रिया के तहत होगी।

जनगणना के लिए मोबाइल ऐप का इस्तेमाल किया जाएगा, जिससे डाटा जल्दी और सटीक रूप से इकट्ठा हो सकेगा। इसके लिए सरकार ने एक निगरानी पोर्टल भी बनाया है, जिससे पूरी प्रक्रिया पर नजर रखी जा सकेगी। केंद्र सरकार 2027 में देश की अगली जनगणना करेगी, जो पूरी तरह डिजिटल होगी। इस बार पहली बार जातियों का भी डाटा एकत्र किया जाएगा और जनगणना के लिए मोबाइल ऐप का इस्तेमाल होगा, जो 16 भाषाओं में उपलब्ध रहेगा। नागरिकों को खुद से जानकारी भरने का विकल्प भी मिलेगा। यह प्रक्रिया 2026 में घरों की सूची से शुरू होगी और फरवरी 2027 में जनसंख्या की गिनती के साथ पूरी की जाएगी। डिजिटल जनगणना से सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि डाटा जल्दी प्रोसेस होगा और अंतिम रिपोर्ट केवल 9 महीनों में जारी की जा सकेगी। मोबाइल ऐप में ड्रॉपडाउन विकल्प, कोडेड सवाल और %फेच% जैसे कई अन्य फीचर्स होंगे, जो रिकॉर्ड को दोहराव से बचाएंगे। इससे कागजी काम घटेगा, समय बचेगा और गलतियों की संभावना भी कम होगी। आईसीआर तकनीक असंगठित उत्तरों को पहचानकर उन्हें तुरंत प्रोसेस करने में मदद करेगी।

लोकसभा चुनाव 2029 में लागू हो सकता है 33 प्रतिशत महिला आरक्षण, सरकार कर रही विचार

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार 2029 के लोकसभा चुनाव में 33 प्रतिशत महिला आरक्षण को लागू करने पर विचार कर रही है।

रिपोर्ट के मुताबिक, केंद्र सरकार नारी शक्ति वंदन अधिनियम पर विचार कर रही है, जिसके तहत अगले लोकसभा चुनाव और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित की जाएंगी। बताया जा रहा है कि महिला आरक्षण विधेयक परिसीमन प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है। केंद्र सरकार के अधिकारियों ने बताया कि महिला आरक्षण को लागू करने के लिए जनगणना होगी। इसके बाद तय समय पर परिसीमन की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। इसके बाद चुनाव आयोग द्वारा निर्वाचन क्षेत्रों के नए परिसीमन के आधार पर 2029 के चुनाव कराए जा सकेंगे।

बता दें कि जनगणना मार्च 2027 से शुरू होगा, जो 2 चरण में होगा। जनगणना 2021 में होनी थी, लेकिन कोरोना के चलते इसे स्थगित कर दिया गया था।

कानून के मुताबिक, इससे राज्य विधानसभाओं, केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली की विधानसभा और लोकसभा में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगा।

इसी 33 प्रतिशत में से एक तिहाई सीटें अनुसूचित जाति (एससी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी) की महिलाओं के लिए होंगी। यानी एससी और एसटी महिलाओं को अलग से आरक्षण नहीं मिलेगा, बल्कि आरक्षण के भीतर ही आरक्षण होगा। विधान परिषद और राज्यसभा में ये आरक्षण लागू नहीं होगा। अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) को भी आरक्षण नहीं मिलेगा।

ब्रसेल्स में एस. जयशंकर यूरोपीय संघ के नेताओं से की मुलाकात, ईयू ने आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने 9 से 11 जून तक ब्रसेल्स की आधिकारिक यात्रा की। यात्रा के दौरान, उन्होंने बेल्जियम के राजा फिलिप और प्रधानमंत्री बार्ट डी वेवर से मुलाकात की और उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री मैक्सिम प्रिवोट के साथ प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता की। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बुधवार को यूरोपीय संघ के शीर्ष नेताओं के साथ कई बैठकें कीं और यूरोपीय संघ-भारत रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने तथा व्यापक और सार्थक व्यापार समझौते की दिशा में प्रगति के तरीकों पर चर्चा की। वहीं, यूरोपीय संघ ने पहलगाम में हुए भीषण आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की और आतंकवाद से अपने नागरिकों की रक्षा करने के भारत के अधिकार की बात दोहराई।

विदेश मंत्रालय ने कहा कि विदेश मंत्री जयशंकर ने भारत के साथ संबंधों के लिए प्रतिनिधिमंडल, विदेश मामलों की समिति और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समिति के यूरोपीय संसद के प्रमुख सदस्यों से भी मुलाकात की। बेल्जियम पक्ष के साथ अपनी द्विपक्षीय बैठकों के दौरान, विदेश मंत्री ने भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु का संदेश सौंपा और राजा फिलिप को अपने तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से शुभकामनाएं दीं। राजा फिलिप ने मार्च 2025 में प्रधानमंत्री मोदी के साथ अपनी टेलीफोन पर हुई बातचीत को याद किया।

वहीं, मंगलवार को प्रधानमंत्री बार्ट डी वेवर के साथ अपनी बैठक में, विदेश मंत्री ने विभिन्न क्षेत्रों में बेल्जियम के साथ अपनी घनिष्ठ साझेदारी को मजबूत करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। प्रधानमंत्री डी वेवर ने पीएम मोदी को बेल्जियम आने का अपना निमंत्रण भी दोहराया। प्रधानमंत्री डी वेवर के साथ हुए मुलाकात के बारे में विदेश मंत्री ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, बेल्जियम के प्रधानमंत्री डी वेवर से मुलाकात करके बहुत खुशी हुई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

कोरबावासियों को मिलेगा कन्वेन्शन सेंटर का लाभ : मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

कन्वेंशन हॉल का मुख्यमंत्री साय ने किया नामकरण, अब जाना जाएगा पुण्य श्लोक लोकमाता अहिल्या बाई होलकर कन्वेंशन हॉल

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय आज कोरबा शहर के रिसदी में नवनिर्मित कन्वेन्शन सेंटर के नामकरण, प्रतिमा अनावरण और 223 करोड़ रुपए के विकास कार्यों के लोकार्पण और भूमिपूजन कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने कन्वेन्शन सेंटर का नाम माता अहिल्याबाई होल्कर के नाम पर करने के साथ ही प्रवेश द्वार पर उनकी प्रतिमा का अनावरण किया। इस दौरान अपने संबोधन में मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि आज कोरबा जिले को करोड़ो रूपये के विकास कार्यों की सौगात मिली है। इसमे 145 करोड़ रुपए के सड़क से सम्बंधित कार्य शामिल भी है। इससे जिले में आवागमन बेहतर होगा और कोरबावासियों को भी इसका समुचित लाभ मिलेगा। उन्होंने कन्वेन्शन सेंटर को वातानुकूलित बनाने की घोषणा करते हुए कहा कि कन्वेन्शन सेंटर बहुत बड़ा है और इसमे अनेक बड़े कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। कोरबावासियों को इसका लाभ मिलेगा। मुख्यमंत्री ने हाऊसिंग बोर्ड द्वारा निर्मित कन्वेन्शन सेंटर की प्रशंसा भी की।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि वे छः माह पहले भी कोरबा आये थे, इस दौरान भी 600 करोड़ से अधिक की राशि के विभिन्न विकास कार्यों की सौगातें दी गई। आज सवा दो सौ करोड़ के विकास कार्यों की सौगात से कोरबा के लोगो को लाभ मिलेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज लोकमाता महारानी अहिल्याबाई होल्कर के प्रतिमा का अनावरण भी किया है। वे इंदौर की महारानी थी और निष्पक्ष और न्यायप्रिय थी। उन्होंने देश के महत्वपूर्ण तीर्थस्थलों, धार्मिक स्थलों को संवारा और पहचान दिलाई। मुख्यमंत्री श्री साय ने कोरबा में एल्युमिनियम पार्क की स्थापना की आई मांग पर भी आवश्यक कार्यवाही करने की बात कही।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उप मुख्यमंत्री श्री अरूण साव ने कहा कि आज का दिन ऐतिहासिक है। कोरबावासियों को विकास कार्यों की सौगात मिलने के साथ ही कन्वेन्शन सेंटर का नामकरण माता अहिल्याबाई होल्कर के नाम पर किया गया। उन्होंने अहिल्याबाई होल्कर की जीवन को रेखांकित करते हुए कहा कि माता अहिल्याबाई ने महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने, नारी सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के साथ ही देश के तीर्थ स्थानों, धार्मिक स्थलों को संवारने का काम किया। अपने राज्य की जनता के सुख-दुख में सहभागी बनने के साथ ही देश को आगे बढ़ाने का काम किया। उप मुख्यमंत्री श्री साव ने प्रतिमा अनावरण एवं नामकरण होने पर सभी बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

उद्योग, वाणिज्य एवं श्रममंत्री श्री लखनलाल देवांगन ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने विगत 16 माह के कार्यकाल में प्रदेश में विकास की गंगा बहाई है। उन्होंने मोदी की गारंटी को पूरा कर गरीबों का कल्याण किया है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कुछ दिन पहले ही कोरबावासियों को 650 करोड़ रूपये से अधिक राशि के विकास कार्यों की सौगात दी थी। बजट में भी उन्होंने कोरबा जिले के विकास के लिए राशि का प्रावधान किया है। इसके साथ ही वे जनता के प्रति संकल्पित होकर राज्य को विकास की दिशा में आगे ले जा रहे हैं। मंत्री श्री देवांगन ने कोरबा जिले में एल्युमिनियम पार्क की स्थापना के लिये मुख्यमंत्री से आवश्यक सहयोग की भी मांग रखी।

कलेक्टर श्री बसंत ने राजमाता अहिल्याबाई होल्कर के शासन, शिक्षा आदि के योगदान को भी रेखांकित किया। इस अवसर पर कटघोरा विधायक श्री प्रेम चंद पटेल, अध्यक्ष गृह निर्माण मंडल श्री अनुराग सिंहदेव, जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. पवन सिंह कंवर, महापौर श्रीमती संजू देवी राजपुत, सभापति श्री नूतन सिंह ठाकुर, पूर्व मंत्री श्री ननकीराम कंवर, सहित जनप्रतिनिधिगण और गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

प्रधानमंत्री आवास योजना की लाटरी 17 जून को

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्र के नागरिकों की सुविधा को देखते हुए प्रधानमंत्री आवास योजना की खुली लाटरी पद्धति का आयोजन 17 जून को रखा गया है। जिसमें मोर मकान-मोर चिन्हारी एवं मोर मकान-मोर आस घटक से निर्मित मकानों का आबंटन होना है। जो हितग्राही पूर्व से आवेदन कर चुके है और मकान का 10 प्रतिशत अंशदान की राशि जमा किए है। उन्हे निगम मुख्य कार्यालय सभागार में समय दोपहर 3:30 बजे से लाटरी निकालकर मकान आबंटन किया जाएगा। प्राप्त हितग्राहियों को जिस स्थल का मकान निर्माण पूर्ण हो गया है, उन जगहो का मकान आबंटन किया जाएगा। हितग्राही निर्धारित समय पर उपस्थित होकर लाटरी में भाग ले सकते है।

15 जून को पेयजल आपूर्ति पूर्णतः बाधित रहेगी

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। वर्षा ऋतु के पूर्व नगर पालिक निगम भिलाई के शिवनाथ इंटेकवेल में संधारण कार्य किया जाना अति आवश्यक है। इस हेतु दिनांक 14.06.2025 को समय सुबह 10 बजे से रात्रि 8 बजे तक शट-डाउन लिया जायेगा। शट-डाउन लिये जाने से शिवनाथ इंटेकवेल से जलप्रदाय पूर्णतः बाधित होने के कारण दिनांक 15.06.2025 को नगर निगम भिलाई एवं नगर निगम रिसाली के समस्त उच्चस्तरीय जलागारों में जलप्रदाय आंशिक रूप से बाधित रहेगी। संधारण कार्य पूर्ण होने पश्चात पूर्व की भांति जल प्रदाय चालू कर दिया जायेगा।

आयुक्त ने खुर्सीपार क्षेत्र में चल रहे सिवरेज लाईन पुनर्निर्माण के कार्यों का औचक निरीक्षण किया

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई के जोन क्रमांक 04 शिवाजी नगर खुर्सीपार अंतर्गत वार्ड क्रं. 38, 39 एवं 42 में सिवरेज लाईन पुनर्निर्माण का कार्य चल रहा है। जिसका निरीक्षण करने आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय, जोन आयुक्त अमरनाथ दुबे को लेकर मौके पर पहुंचे। वहां सिवरेज लाईन पुनर्निर्माण का कार्य एजेंसी मेसर्स सी.बीजू द्वारा किया जा रहा है, आयुक्त ने चल रहे सिवरेज लाईन के कार्यो का जानकारी प्राप्त किए और कार्य की गुणवत्ता को बनाए रखते हुए कार्य करने हेतु निर्देशित किए। निर्माण कार्य के गुणवत्ता में किसी प्रकार की कमी न हो इसके लिए विशेष सुझाव दिए गए। आयुक्त पाण्डेय ने उपस्थित अधिकारियों को भी निर्देशित किये कि चल रहे कार्यो का निरीक्षण प्रतिदिन करते रहें। एजेंसी को दिए गए कार्य समय अवधि का पूर्णता से पालन करने निर्देशित किया गया। स्थल पर सिवरेज लाईन चेम्बर का ढक्कन अज्ञात लोगो द्वारा तोड़कर लोहा चोरी कर लिया गया है, चोरो द्वारा कबाड़ी का सामग्री खरीदने एवं बेचने वालो की मिली भगत से चोरी का लोहा खरीदी-बिक्री किया जा रहा है। संलिप्त अज्ञात व्यक्तियों एवं कबाड़ियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करने थाने में एफ.आई.आर. दर्ज कराने अधिकारियों को निर्देशित किए।

निरीक्षण के दौरान कार्यपालन अभियंता रवि सिन्हा, सहायक अभियंता प्रिया खैरवार, उपअभियंता चंदन निर्मल, चंद्रकांत साहू, जोन सहायक राजस्व अधिकारी बालकृष्ण नायडू, जोन स्वास्थ्य अधिकारी हेमंत मांझी एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

5 नवीन पीडीएस दुकान संचालन के लिए आवेदन आमंत्रित

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। नगर पालिका बलौदाबाजार अंतर्गत स्वामी विवेकानन्द वार्ड, राजीव गांधी वार्ड,गुरु नानक देव वार्ड,चंद्रशेखर आजाद वार्ड एवं रानी लक्ष्मी बाई वार्ड में नवीन शासकीय उचित मूल्य दुकान संचालन किया जाना है। दुकान हेतु लैम्प्स, प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति,वन सुरक्षा समिति, महिला स्व सहायता समूह, ग्राम पंचायतों अन्य सहकारी समितियों से आवेदन आमंत्रित किया गया है। समस्त दस्तावेजों के साथ आवेदन पत्र कार्यालय कलेक्टर खाद्य शाखा जिला बलौदाबाजार-भाटापारा कक्ष क्रमांक 80 में कार्यालय समय पर जमा कर सकते है।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
ई-निविदा सूचना

निविदा सूचना क्र.: 110-06-Mod MPCS-WAG7-II दिनांक: 09.06.2025 **कार्य का नाम:** रिले प्रकार के इंजनों को MPCS (संस्करण3) फिटेड इंजनों में परिवर्तित करना, विद्यमान सर्किट को विधिवत रूप से परिवर्तित और संशोधित करना तथा विद्युत इंजनों में MPCS (संस्करण 3) के लिए उपयुक्त नया केबल उपलब्ध कराना (WAG7)। **मात्रा:** 25 लोको। **निविदा मूल्य:** ₹ 1,79,43,037.75 **ईएमडी:** ₹ 2,39,700.00, **निविदा दस्तावेज की लागत:** शून्य, **निविदा बंद होने की तारीख व समय:** दि. 04.07.2025 के 11:00 बजे। इस निविदा के खिलाफ मैनुअल प्रस्ताव की अनुमति नहीं है व मैनुअल प्रस्ताव अस्वीकार कर दिए जाएंगे। उपरोक्त निविदा की विस्तृत जानकारी एवं पात्रता मानदंड के लिए कृपया Sr.DME (D)/DLS/SECR/रायपुर के कार्यालय से संपर्क करें/वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध निविदा दस्तावेज डाउनलोड करें।

मंडल विद्युत इंजिनियर (DLS),
द.पू.म. रेलवे, रायपुर
PR/R/DLS/PC/62
South East Central Railway @secrail

कार्यालय राजस्व निरीक्षक रायपुर-11 (टिकरापारा) तहसील व जिला रायपुर सीमांकन के संबंध में
आम सूचना
दिनांक 12/06/2025

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका शारदा नामदेव पति स्व. जी0 पी0 नामदेव निवासी चौबे कालोनी रायपुर द्वारा आवेदित ग्राम अमलीडीह प.ह.नं.69 राजस्व निरीक्षक मंडल रायपुर-11 (टिकरापारा) स्थित भूमि खसरा नंबर 15043/16 रकबा 0.0214 हेक्टेयर का सीमांकन न्यायालय नायब तहसीलदार रायपुर के ज्ञापन क्र.../अ-12/2024-25 रायपुर के आदेश दिनांक 27/05/2025 के परिपालन में दिनांक 27/06/2025 को समय 12.00 बजे प्रारंभ किया जाना है। अतः उक्त भूमि के सीमांकन में जिस किसी व्यक्ति या संस्था को कोई दावा या आपत्ति हो वह उक्त दिनांक / समय तक पटवारी हल्का नंबर 69 के अमलीडीह स्थित कार्यालय में दस्तावेजों सहित स्वयं अथवा अपने वैध अभिभाषक के माध्यम से उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकते हैं। बाद के किसी दावा या आपत्ति पर मेरे द्वारा विचार किया जाना संभव नहीं होगा। अतः सूचना जाने।

राजस्व निरीक्षक रायपुर-11
(टिकरापारा) तहसील व जिला रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-
नामांतरण प्रकरण क्र. 129 दिनांक 12.06.2025
वार्ड का नाम- लाल बहादुर शास्त्री वार्ड
वार्ड क्र. 13 वर्ष- 2025-26

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 13 मांग **पंजी क्र. 428 युआईडी 16355** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **भानुप्रताप साहू/ माखन लाल** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **निशा वर्मा/ स्व. भूपेन्द्र कुमार वर्मा** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **12-07-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./21557/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21557
वार्ड का नाम- 28 - शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR235J0156A** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **AJRA SHAHEEN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O LT. MOHAMMAD ASHRAF KHAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SHAGUFTA BEGUM** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O SYED KHALID AKHTAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /21605/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2025
रायपुर, दिनांक 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21605
वार्ड का नाम- 69 - माधवराव सप्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 69 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR568C0208E** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SUNNY BINDRA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RANJEET SINGH BINDRA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **GOPAL PRASAD SONWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAMKUMAR SONWANI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री जसदेव सिंह बाबरा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /21611/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2025
रायपुर, दिनांक 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21611
वार्ड का नाम- 69 - माधवराव सप्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 69 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR568H00107** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **PARVATI VAGALRHA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAJENDRA KANOJE** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. RANJITA THAKUR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LOK SINGH THAKUR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री जसदेव सिंह बाबरा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./21527/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2025
रायपुर, दिनांक 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21527
वार्ड का नाम-44 - ब्राम्हणपारा दार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 44 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR759E00048** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **KONDA RAM DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAM VISHAL DEWANGAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **पवन कुमार देवांगन** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. कोंदा राम देवांगन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, टैक्स रसीद, परिचय दस्तावेज, पारिवारिक व्यवस्थानामा, मृत्यु प्रमाण पत्र व अन्य दस्तावेज**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरुण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./21493/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21493
वार्ड का नाम- 28 - शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR235D00436** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SMT. NIRMALA DIVI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O TARACHAND JAIN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. HEMLATA JAIN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O YUVRAJ JAIN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./21560/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21560
वार्ड का नाम- 28 - शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR225B00120** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MRS. HARSHA SANGANANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O TRILOK SANGANANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. PAWAN NAGPAL 2. DILIP NAGPAL 3. CHETAN NAGPAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O MANOHARLAL NAGPAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./21554/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21554
वार्ड का नाम- 36 - हवलदार अब्दूल हमीद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 36 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR436H00109** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MADHUSUDAN TRADERS** पिता/पति, श्री/श्रीमती **..........** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ADITYA BAGREE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O BRIJ MOHAN BAGREE** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./21540/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21540
वार्ड का नाम- 13 - राजीव गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 13 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR223D0076A** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **KUSUM MANIKPURI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O LT. AJAY DAS MANIKPURI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **GAURAV SONI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O RAMESH SONI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./21552/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21552
वार्ड का नाम- 27 - इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR220F00189** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MR. BIHARI LAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O DASRU RAM SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **KHEMRAJ SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O LATE. BIHARI SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत वसीयतनामा**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./21551/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21551
वार्ड का नाम- 27 - इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR220F00036** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MRS. MANGALA BAJAJ** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O LATE. NARAYAN BAJAJ** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. MANISH KUMAR MARATHA 2. SMT. NEHA PATHRABE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **1. S/O LT. NARAYAN DAS 2. W/O YOGESH PATHRABE** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./21558/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21558
वार्ड का नाम- 28 - शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR225D00161** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **PRADEEP KUMAR SONDHI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O OM PRAKASH SONDHI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **RITESH KUMAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O BHAGVAN KHETAN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर (छ.ग.), फोन नं.-0771-2991574
email Id- eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि सामान्य आवास योजनांतर्गत बोरियाकला, कॉलोनी, रायपुर में स्थित **भवन क्रमांक CEDAR-II/145 श्री देवब्रत बर्मन पिता स्व. श्री उपेन्द्र कुमार बर्मन,** के नाम से एकमुश्त आधार पर आबंटित है। आबंटी द्वारा उक्त भवन की सेलडीड दिनांक **17.07.2014** को पंजीकृत कराने उपरान्त भवन की पूर्ण राशि जमाकर इस कार्यालय का पत्र कमांक **426** दिनांक **05.12.2014** के माध्यम से आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया है, वर्तमान में आबंटी **श्री देवब्रत बर्मन पिता स्व. श्री उपेन्द्र कुमार बर्मन, निवासी- सांई मंदिर के पास गीतांजली नगर रायपुर, जिला-रायपुर (छ.ग.)** के द्वारा उक्त भवन को क्रेता **श्री प्रसून श्रीवास्तव पिता श्री आर. के. श्रीवास्तव, निवासी- सुन्दर नगर डंगनिया, रायपुर तहसील व जिला रायपुर (छ.ग.)** के नाम से विक्रय करने के लिये इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत कर अनापत्ति प्रमाण पत्र **(NOC)** की मांग की गई है।

अत: उक्त भवन के विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक, अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के **15 दिवस** के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, सेजबहार रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./21460/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025
रायपुर, दिनांक 10-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21460
वार्ड का नाम- 15 ने. कन्हैयालाल बाजारी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 15 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107L00593** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **PRIYA BEN BEGDA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **ALAP KUMAR BEGDA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ANJANA VEGAD** पिता/पति, श्री/श्रीमती **JITENDRA VEGAD** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती दिव्या चंद्रवंशी
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./21317/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2025
रायपुर दिनांक : 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21317
वार्ड का नाम- 59 मोरेश्वर राव गद्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 59 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी- आई.डी.-**RPR653F00146** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **ASHWANI KUMAR SEN, NARENDRA KUMAR SEN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SANAT SEN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **NARENDRA SEN** पिता/पति श्री/श्रीमती **SANAT SEN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **SAPATH PATRA**/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/ आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./21536/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2025
रायपुर, दिनांक 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21536
वार्ड का नाम-44 ब्राम्हणपारा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 44 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR759E0049A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **CHAITURAM** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAMVISHAL, (JOHAN DEWANGAN S/O CHAITURAM DEWANGAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **लक्ष्मण प्रसाद देवांगन** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. चैतू राम देवांगन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, टैक्स रसीद, परिचय दस्तावेज, पारिवारिक व्यवस्था पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र व अन्य दस्तावेज**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरुण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./21538/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2025
रायपुर, दिनांक 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21538
वार्ड का नाम-44 - ब्राम्हणपारा दार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 44 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR759E0049B** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **CHAITURAIM** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAMVISHAL, (JOHAN DEWANGAN S/O CHAITURAM DEWANGAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **जोहन लाल देवांगन** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. चैतू राम देवांगन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, टैक्स रसीद, परिचय दस्तावेज, पारिवारिक व्यवस्था पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र व अन्य दस्तावेज**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरुण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./21529/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2025
रायपुर, दिनांक 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21529
वार्ड का नाम-44 - ब्राम्हणपारा दार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 44 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR759E0048A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **KONDA RAM DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAM VISHAL DEWANGAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **गौतम देवांगन** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. कोंदा राम देवांगन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, टैक्स रसीद, परिचय दस्तावेज, पारिवारिक व्यवस्था नामा, मृत्यु प्रमाण पत्र व अन्य दस्तावेज**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरुण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./21530/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2025
रायपुर, दिनांक 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21530
वार्ड का नाम-44 - ब्राम्हणपारा दार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 44 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR759E0048B** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **KONDA RAM DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAM VISHAL DEWANGAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **दुलार राम देवांगन** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. कोंदा राम देवांगन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, टैक्स रसीद, परिचय दस्तावेज, पारिवारिक व्यवस्था पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र व अन्य दस्तावेज**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरुण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./21532/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2025
रायपुर, दिनांक 12-06-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 21532
वार्ड का नाम-44 - ब्राम्हणपारा दार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 44 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR759E00049** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **CHAITURAM** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAMVISHAL, (JOHAN DEWANGAN S/O CHAITURAM DEWANGAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. कमलेश देवांगन 2. नरेश कमार देवांगन** पिता/पति, श्री/श्रीमती **दोनों पिता स्व. मोहन लाल देवांगन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, टैक्स रसीद, परिचय दस्तावेज, पारिवारिक व्यवस्थानामा, मृत्यु प्रमाण पत्र व अन्य दस्तावेज**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरुण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर शुक्रवार 13 जून 2025

अग्रवाल समाज के संभागीय भवन का विधायक राजेश अग्रवाल ने किया लोकार्पण

सरगुजा संभाग की 28 सभाओं से प्रतिनिधि हुए शामिल

17 जून को होगा नए संभागीय अध्यक्ष का चुनाव सुभाष गोयल सहित 13 प्रत्याशी होंगे मैदान में

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- सरगुजा संभागीय अग्रवाल महासभा के द्वारा अम्बिकापुर संभागीय मुख्यालय में निर्मित संभागीय भवन का लोकार्पण व अग्र गौरव सम्मान का आयोजन भव्य रूप से किया गया। जिसमें अम्बिकापुर विधायक राजेश अग्रवाल के मुख्य आतिथ्य व संभागीय अध्यक्ष श्रीनिवास केडिया की अध्यक्षता के साथ प्रदेश अग्रवाल संगठन के अध्यक्ष डॉ. अशोक अग्रवाल, प्रदेश अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष कृष्ण कुमार अग्रवाल, अम्बिकापुर नगर निगम के पूर्व सभापति अजय अग्रवाल, संस्थापक अध्यक्ष चरण सिंह अग्रवाल व रामानुजगंज नगर पालिका अध्यक्ष रमन अग्रवाल के विशिष्ट आतिथ्य में समारोह प्रारंभ हुआ। इस दौरान संभाग के पूर्व अध्यक्ष राजेन्द्र अग्रवाल, गौरीशंकर अग्रवाल व कश्मीरीलाल अग्रवाल के साथ संभागीय निर्माण समिति के अध्यक्ष विनोद अग्रवाल, मुख्य चुनाव अधिकारी अमृत लाल अग्रवाल, महामंत्री सुनील अग्रवाल, कोषाध्यक्ष राधेश्याम अग्रवाल व समारोह के स्वागताध्यक्ष सुभाष गोयल, संरक्षक ब्रम्ह प्रकाश अग्रवाल, रामलाल अग्रवाल, विशंभरदयाल अग्रवाल मंचासीन थे। स्व. खजांचीलाल अग्रवाल व श्रीमती शांति देवी अग्रवाल की स्मृति में बने संभागीय भवन में पूजा-अर्चना व मूर्ति अनावरण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। जिसमें सरगुजा संभाग के अम्बिकापुर, बतौली, सीतापुर, प्रतापगढ़, डांडगांव, उदयपुर, लखनपुर, सूरजपुर, बिश्रामपुर, प्रतापपुर, भैयाथान, राजपुर, शंकरगढ़, रामानुजगंज, बैकुण्ठपुर, मनेन्द्रगढ़, लुड़ेग, कुनकुरी, कांसाबेल, पत्थलगांव, कोतबा, बगीचा, बरियों, तपकरा, चिरमिरी इत्यादि स्थानों से अग्रवाल सभाओं के पदाधिकारी व संभागीय सदस्य आयोजन में शिरकत करने पहुंचे। इस दौरान सामाजिक अग्रजों के द्वारा जिला पंचायत सदस्य, जनपद उपाध्यक्ष, जनपद सदस्य, उप सरपंच, पंच, नपा अध्यक्ष, नपा उपाध्यक्ष, पार्षद पद पर निर्वाचित 60 से अधिक जनप्रतिनिधियों का सम्मान किया गया। वहीं यूपीएससी, पीएससी के साथ प्रतिष्ठित प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल युवाओं व छात्रों अग्र गौरव सम्मान प्रदान किया गया। समारोह में स्वागताध्यक्ष सुभाष गोयल ने सभी अतिथियों व अग्रजों का सम्मान किया। वहीं संभागीय अध्यक्ष ने संभाग का वृत्त प्रस्तुत किया। संस्थापक अध्यक्ष चरण सिंह अग्रवाल ने संभागीय महासभा के 14 साल के सफर को बताया। वहीं विधायक राजेश अग्रवाल ने सामाजिक दृष्टिकोण से अपनी बातें रखी और समाज के द्वारा संचालित विभिन्न कार्यों व जनसेवी योजनाओं पर प्रसन्नता व्यक्त की व संभाग के नए भवन की पदाधिकारियों को बधाई दी। पूर्व सभापति अजय अग्रवाल ने मंच से समाज के पदाधिकारियों से रूबरू होते हुए सामाजिक कार्यों के प्रति लगन से काम करने तथा मानवीय मूल्यों के कत्तव्यों के निर्वहन में प्रमुख सामाजिक भूमिका को लेकर अपने विचार रखे। अग्रवाल संगठन के प्रदेश अध्यक्ष डॉ.अशोक अग्रवाल ने सामाजिक परिवेश की बातचीत करते हुए प्रदेश में चल रही विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं से अवगत कराया। अग्रवाल सम्मेलन के प्रदेश अध्यक्ष कृष्ण कुमार अग्रवाल ने आयोजन की बधाई देते हुए सामाजिक संगठन सर्वोपरि का नारा दिया। इस दौरान अग्रवाल संगठन के द्वारा संचालित एबीसीडी योजना से रायपुर से पधारे ललित अग्रवाल ने सभासदों को अवगत कराया। समारोह का सफल संचालन महामंत्री सुनील अग्रवाल व आभार प्रदर्शन युवा महामंत्री मुकेश गर्ग ने किया।

17 जून को होगा सांगठनिक चुनाव- मुख्य चुनाव अधिकारी अमृत लाल अग्रवाल व सहायक चुनाव अधिकारी मुकेश गर्ग तथा प्रमोद अग्रवाल ने बताया कि आगामी 17 जून को संभागीय भवन में ही नए संभागीय अध्यक्ष के लिए सांगठनिक चुनाव संपन्न होगा। जिसके लिए समाज के विभिन्न क्षेत्रों से 13 प्रत्याशियों ने अपनी उम्मीदवारी दर्ज कराई है। जिसमें सुभाष गोयल विश्रामपुर, अंजनी अग्रवाल पत्थलगांव, अनिल अग्रवाल पत्थलगांव, जय भगवान अग्रवाल प्रतापगढ़, कृष्ण कुमार अग्रवाल अम्बिकापुर, मुकेश अग्रवाल शंकर ट्रेडर्स अम्बिकापुर, मुकेश अग्रवाल पर्पल आर्चिड अम्बिकापुर, मनोज अग्रवाल लखनपुर, पवन अग्रवाल पत्थलगांव, राजेश अग्रवाल अम्बिकापुर, संजय गोयल अम्बिकापुर, संजय मित्तल अम्बिकापुर, सुभाष गोयल बिश्रामपुर व विनोद अग्रवाल अम्बिकापुर ने अपनी दावेदारी प्रस्तुत की है।

संक्षिप्त समाचार

जिले में लगे कृषि शिविर, 1106 किसान हुए लाभान्वित

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्वा परिवार))- विकसित कृषि संकल्प अभियान के अंतर्गत जिले के विभिन्न ग्राम पंचायतों में विगत दिवस दो पालियों में कृषि शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों का उद्देश्य किसानों को वैज्ञानिक एवं आधुनिक कृषि पद्धतियों से अवगत कराना, उनकी समस्याओं का समाधान करना तथा नवीन कृषि तकनीकों के प्रति जागरूक करना रहा। शिविरों में कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन एवं मत्स्य विभाग के अधिकारियों के साथ कृषि वैज्ञानिक, कृषि सखी, कृषक मित्र, पशु सखी तथा प्रगतिशील कृषकों ने सहभागिता की। इस दौरान किसानों को मोटे अनाज (मिलेट्स) की खेती, फसल चक्र परिवर्तन, प्राकृतिक और जैविक खेती, उन्नत बीज एवं कृषि यंत्रों का उपयोग, जल संरक्षण, मूल्य संवर्धन, पशुपालन एवं उद्यानिकी से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। उल्लेखनीय है कि करसी एवं टुकुडांड शिविर स्थल पर डॉ. के.एल. पैकरा, तेलगंवा एवं केवटाली में डॉ. योगेन्द्र राठौर तथा देवनगर एवं पस्ता शिविर स्थल पर डॉ. आर.एस. सिदार ने किसानों को मार्गदर्शन दिया। इन शिविरो में कुल 1106 कृषक लाभान्वित हुए। शिविर के दौरान 12 स्प्रेयर, 20 सॉयल हेल्थ कार्ड, 11 धान बीज पैकेट, 10 पैकेट खाद तथा 295 फलदार पौधों का वितरण किया गया।

प्रधानमंत्री आवास निर्माण को समयबद्ध रूप से पूर्ण करावें- जिला पंचायत सीईओ

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)- जिला पंचायत सूरजपुर की मुख्य कार्यपालन अधिकारी कमलेश नंदनी साहू ने कलेक्टर एस. जयवर्धन के निर्देश पर जनपद पंचायत प्रतापपुर अंतर्गत विभिन्न ग्राम पंचायतों में चल रहे मोर गांव मोर पानी महाअभियान, मनरेगा और प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के कार्यों का औचक निरीक्षण कर विकास कार्यों की जमीनी हकीकत का जायज़ा लिया।

निरीक्षण के दौरान ग्राम पंचायत मानी में अमृत सरोवर और रिचार्ज पिट, लोलकी में मिट्टी बांध, गैबियन और सोक्ता गड्ढा, पहिया में अमृत सरोवर और चंदौरा में मिट्टी बांध के निर्माण कार्यों का गहन निरीक्षण किया गया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि आगामी वर्षा ऋतु से पहले सभी आवश्यक मरम्मत कार्यों को प्राथमिकता दी जाए ताकि ग्रामीणों को खेती के लिए अधिकतम जल स्रोत उपलब्ध हो सके। इससे खरीफ के साथ-साथ रबी की फसल की भी अच्छी पैदावार सुनिश्चित हो सकेगी, जिससे ग्रामीणों की आय में सीधा इजाफा होगा।

सीईओ साहू ने कहा कि ग्रामीणों के मनोबल को बढ़ाना और सभी हितग्राहियों का समन्वय स्थापित करना ही योजनाओं की सफलता की कुंजी है। इस दिशा में समन्वित प्रयासों की जरूरत है।

प्रधानमंत्री आवास योजना में गति लाने के निर्देश - प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत ग्राम पंचायत चंदौरा, पहिया, मानी, और लोलकी में चल रहे आवास निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए उन्होंने स्वयं सहायता समूहों की सक्रिय महिलाओं, ग्राम पंचायत मेट, रोजगार सहायक, और सचिव को आपसी समन्वय बनाकर तय समय सीमा में सभी आवास पूर्ण करने के निर्देश दिए।

इसके साथ ही उन्होंने विकासखंड स्तरीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि आवास की किस्तों का भुगतान समयबद्ध रूप से किया जाए ताकि निर्माण में कोई बाधा न आए। सभी हितग्राहियों को अपने पक्के मकानों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाने के लिए प्रेरित किया गया, जिससे जल संरक्षण और सतत कृषि को बढ़ावा मिल सके।

ग्रामीण विकास के लिए लगातार सक्रिय हैं जिला पंचायत सीईओ - राज्य शासन की मंशा के अनुरूप जिला पंचायत सीईओ श्रीमती कमलेश नंदनी साहू निरंतर ग्राम स्तर पर योजनाओं की निगरानी कर रही हैं ताकि शासन की योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। उनके सक्रिय निरीक्षण और दिशा-निर्देशों से न केवल कार्यों में पारदर्शिता आई है, बल्कि ग्रामीणों के बीच भरोसा और उत्साह भी बढ़ा है।

यह निरीक्षण न केवल योजनाओं की प्रगति का आकलन था, बल्कि अधिकारियों और ग्रामीणों को एक प्रेरणा भी थी कि यदि समन्वय और संकल्प हो, तो विकास की राह आसान हो सकती है।

आदतन अपराधी सत्येंद्र कुमार तिवारी उर्फ सत्येंद्र राय 6 महीने के लिए जिला बदर

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- अवैध कार्यों सहित आदतन अपराधिक गतिविधि में संलिप्त व्यक्ति के विरूद्ध सूरजपुर पुलिस के द्वारा लगातार सख्ती बरती जा रही है। गंभीर आपराधिक गतिविधियों में संलिप्तता के कारण सूरजपुर पुलिस ने 1 आदतन अपराधी के विरूद्ध जिला बदर की अनुशंसा की थी जिस पर कलेक्टर सूरजपुर ने आदतन अपराधी को 6 माह की अवधि के लिए जिलाबदर का आदेश जारी किया है।

जिले में शांती एवं सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाये रखने के लिए अवैध गतिविधियों में संलिप्त लोगों एवं आदतन आरोपियों पर सतत निगरानी रखी जा रही हैं और अवैध गतिविधियों पर कड़ी कार्यवाही भी की जा रही है। इसी तारतम्य में डीआईजी व एसएसपी सूरजपुर श्री प्रशांत कुमार ठाकुर के अनुशंसा पर कलेक्टर सूरजपुर श्री एस. जयवर्धन ने जिले के आदतन अपराधी सत्येन्द्र कुमार राय उर्फ सत्येन्द्र तिवारी उर्फ मोनू पिता रामप्यारे उम्र 37 वर्ष निवासी नगर पंचायत प्रेमनगर, थाना प्रेमनगर के विरूद्ध जिला बदर का आदेश जारी किया है। छत्तीसगढ़ राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा-5 के तहत दाण्डिक प्रकरण में पारित आदेश के अनुसार आदतन अपराधी सत्येन्द्र कुमार राय उर्फ सत्येन्द्र तिवारी उर्फ मोनू को 10 जून 2025 से जिला सूरजपुर तथा समीपवर्ती राजस्व जिला सरगुजा, कोरबा, कोरिया, बलरामपुर-रामानुजगंज, मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर (छत्तीसगढ), सिंगरौली मध्यप्रदेश जिला क्षेत्र से 6 माह की अवधि के लिए बाहर चले जाने और जब तक यह आदेश लागू रहेगा, बिना वैधानिक पूर्व अनुमति लिए इस जिले एवं उल्लेखित जिलों की सीमा में प्रवेश नहीं करने, आदेश का पालन न करने पर वैधानिक कार्यवाही की जायेगी। आदतन अपराधी सत्येन्द्र कुमार राय उर्फ सत्येन्द्र तिवारी उर्फ मोनू के विरूद्ध कुल 09 प्रकरण जिनमें 3 मारपीट गाली-गलौज, एसटीएससी एक्ट सहित शासकीय कार्य में बाधा, शासकीय सेवा को अभित्रास करना एवं मेडिकल प्रो. एक्ट के तहत, 1 अपराध उद्दीपन सहित एसटीएससी एक्ट एवं 05 बार परिशांति कायम रखने प्रतिबंधक धाराओं के तहत कार्यवाही की गई है।

निरीक्षण दल ने खाद-बीज दुकानों एवं रेक पॉइंट विश्रामपुर का किया गया निरीक्षण

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- किसानों को गुणवत्ता युक्त एवं मानक स्तर का उर्वरक एवं बीज उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कलेक्टर एस. जयवर्धन के निर्देश पर उप संचालक कृषि के मार्गदर्शन में विकासखण्ड स्तरीय निरीक्षण दल द्वारा विकासखण्ड-रामानुजनगर के आदिम जाति सेवा सहकारी समिति मर्या. उमापुर का औचक निरीक्षण किया । निरीक्षण के दौरान संदेह के आधार पर कृष्णा फोस्केम लिमि. कम्पनी का उर्वरक एन.पी. के. 20:20:0:13 का नमूना लिया तथा विश्लेषण परिणाम आने तक उक्त उर्वरक की मात्रा 32.45 मे.टन का विक्रय प्रतिबंध लगाया , अभिलेखों का परीक्षण करने पर कमियां पाये जाने पर संबंधित प्रबंधक को कारण बताओं नोटिस जारी किया । उक्त कार्यवाही करते समय उर्वरक निरीक्षक सह वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी प्रफुल्ल गुप्ता एवं क्षेत्रीय ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी उपस्थित थे। साथ ही जिला एवं विकासखण्ड स्तरीय निरीक्षण दल द्वारा विश्रामपुर उर्वरक रेक पांइट का निरीक्षण किया जिसमें उर्वरक निर्माता कम्पनी पारादीप फास्फेट लिमि. कम्पनी का डी.ए.पी. उर्वरक का 5 नमूना, फास्फो जिप्सम का 1 नमूना तथा उर्वरक निर्माता कोरोमण्डल इंटरनेशनल लिमि. कम्पनी का एन.पी.के. 20रू20रू0रू13 का 1 नमूना लिया गया।

मामूली बात पर हत्या,आरोपी गिरफ्तार

कोरबा। जिल के चौकी कोरबी, थाना पसान, क्षेत्र में हुई हत्या के मामले में पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी ने मामूली विवाद पर हत्या की घटना को अंजाम दिया था। मिली जानकारी के अनुसार दिनांक 09.06.2025 को प्रार्थी घूराऊ राम धनवार, निवासी ग्राम घुमानीडॉड, थाना बांगो, जिला कोरबा द्वारा थाना में रिपोर्ट दर्ज कराई गई कि उसका पुत्र जानसाय उर्फ छोटू धनवार, दिनांक 06.06.2025 को अपनी मौसी फुलसुंदरी बाई धनवार, निवासी कोठीखरॉ के यहां मेहमानी हेतु गया था। दिनांक 08.06.2025 की रात 8:00 बजे वह खाना खाकर बाहर टहलने निकला और रात्रि में वापस नहीं आया। अगले दिन खोजबीन के दौरान सुबह 9:00 बजे जानसाय की लाश मोहन राम धनवार के आंगन में रखे खाट पर मिली, जिसके शरीर पर लाठी-डंडे से मारपीट के गंभीर चोटों के निशान थे। मामले में थाना चौकी कोरबी में धारा 103(1), 238 बीएनएस के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना प्रारंभ की गई। घटना की सूचना पर पुलिस अधीक्षक कोरबा सिद्धार्थ तिवारी (भा.पु.से.) के निर्देशन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नीतिश ठाकुर (रा.पु.से.) के पर्यवेक्षण एवं बांगो थाना प्रभारी निरीक्षक दुर्गेश वर्मा, कोरबी चौकी प्रभारी उप निरीक्षक सुरेश कुमार जोगी तथा थाना पसान व चौकी कोरबी के अन्य स्टाफके नेतृत्व में एक विशेष टीम गठित की गई। तकनीकी साक्ष्य एवं सघन पूछताछ के आधार पर संदेही मोहन राम धनवार, उम्र 45 वर्ष, निवासी कमीपारा, कोठीखरॉ, को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। पूछताछ में आरोपी ने स्वीकार किया कि मृतक जानसाय धनवार पूर्व में उसके घर खपरा लगाने का कार्य कर चुका था एवं दिनांक 08.06.2025 की रात शराब के नशे में आरोपी को गाली गलौज करने पर गुस्से में आकर उसने लाठी व नुकीली छड़ से हमला कर हत्या कर दी।

वीर शहीद अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आकाश राव गिरपुंजे के सर्वोच्च बलिदान पर दी श्रद्धांजलि

शहीद अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक की शहादत को देश कभी भुला नहीं पाएगा- वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)- सुकमा जिले के कोंटा में नक्सलियों द्वारा किए गए आईईडी विस्फोट में शहीद अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (एएसपी) श्री आकाश राव गिरपुंजे द्वारा देश की सुरक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान देने पर शहीद के वीरता एवं पराक्रम कों याद करते हुए डीआईजी व एसएसपी सूरजपुर श्री प्रशांत कुमार ठाकुर के दिशा निर्देशन में पुलिस लाईन में वीर शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया।

डीआईजी व एसएसपी सूरजपुर ने वीर शहीद के छायाचित्र पर दीप प्रज्जवलित कर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजली दी। उन्होंने श्री आकाश राव गिरपुंजे के कार्यकाल के बारे में बताया कि वे काफी साहसी थे, दुर्गम इलाको में खुद टीम को लीड कर ले जाते थे और सभी की सुरक्षा का विशेष ध्यान देते थे, ऐसे जांबाज व होनहार पुलिस अधिकारी की शहादत को देश कभी भुला नहीं सकता। देश की सुरक्षा और कानून व्यवस्था के लिए दिया गया उनका बलिदान हमेशा याद रखा जाएगा।

वीर शहीद श्री आकाश राव गिरपुंजे को जिले के पुलिस अधिकारी एवं जवानों ने पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित किया। इस अवसर पर सभी ने वीर शहीद के परम बलिदान एवं पराक्रम कों याद करते हुए पुष्प अर्पित कर सलामी दी, तत्पश्चात सभी पुलिस अधिकारियो/कर्मचारियों द्वारा 02 मिनट का मौन धारण कर वीर शहीद कों श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया। श्रद्धांजलि कार्यक्रम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संतोष महतो, एसडीओपी सूरजपुर अभिषेक पैंकरा, रक्षित निरीक्षक अशोक गिरी, निरीक्षक लक्ष्मण सिंह धुर्वे, प्रकाश राठौर सहित पुलिस लाईन के अधिकारी व जवान उपस्थित रहे।

शिक्षा न्याय आंदोलन में शहर कांग्रेस ने घेरा बीईओ कार्यालय

चरणबद्ध आंदोलन में डीईओ कार्यालय का होगा घेराव

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर पूरे प्रदेश में शिक्षा न्याय आंदोलन के साथ शिक्षा न्याय यात्रा के चल रहे चरणबद्ध आंदोलन में शहर कांग्रेस कमेटी सूरजपुर के द्वारा स्थानीय विकासखंड शिक्षा अधिकारी के कार्यालय का घेराव कर जोरदार प्रदर्शन व नारेबाजी करते हुए अपना विरोध दर्ज किया। शहर कांग्रेस अध्यक्ष संजय डोसी के नेतृत्व में बड़ी संख्या में उपस्थित शहर कांग्रेस व किसान कांग्रेस के पदाधिकारी के साथ युवक कांग्रेस व एनएसयूआई सहित नगरीय निकाय के जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में स्थानीय रंगमंच से बीईओ कार्यालय तक रैली निकाल कर भाजपा सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई। हाथों में तख्तियां लेकर कांग्रेस कार्यकर्ताओ ने सरकार पर शिक्षा के मंदिरों में राजनीति करने का आरोप लगाया और कहा कि भाजपा की सरकार प्रदेश में 10000 स्कूल बंद करने का षड्यंत्र रच रही है। जिससे निजी विद्यालयों को सीधा लाभ मिलेगा। वहीं कहा कि युक्तियुक्तकरण के माध्यम से सरकार की नीतियां रोजगार विरोधी नीति के रूप में है। जिसका विरोध पूरा शिक्षा जगत कर रहा है। इस दौरान बीईओ कार्यालय को घेर कर मुख्य द्वार पर नारेबाजी करते हुए कांग्रेस के कार्यकर्ता काफी समय तक वहां धरने पर बैठे रहे और बाद में तहसीलदार इजराईल खान व बीआरसी मनोज मंडल के समझाईस पर शहर कांग्रेस के कार्यकर्ता वहां से हटे। इस दौरान बड़ी संख्या में पुलिस बल भी तैनात था। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत बीईओ कार्यालय घेराव में किसान कांग्रेस के प्रदेश उपाध्यक्ष रामकृष्ण ओझा, विमलेश दत्त तिवारी, नगर पालिका अध्यक्ष कुसुमलता राजवाड़े, पूर्व एआईसीसी सदस्य सुनील अग्रवाल, शकील हुसैन, पार्षद पारसनाथ राजवाड़े, प्रवेश गोयल,मंजूलता गोयल, सावित्री शर्मा, इम्तियाज़ खान, युंकाध्यक्ष परमेश्वर राजवाड़े, शक्ति ठाकुर, सैयद आमिल, कौनेंन अंसारी, अजय सोनवानी,पवन साहू,शान्तु डोसी,राजपाल कसेरा,गिरधारी साहू,हरि साहू,मधु साहू,शिवम साहू,राजेश साहू, इमरान इराकी,मोहम्द अजहर,जब्बारुल हक,ईशु डालमियां, मोंटू साहू,आशीष सिंह,सौरभ सिंह बघेल,राजू पाटले,रजा अंसारी,आर्यन साहू,हैदर,भोला राम सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस व अनुसांगिक संगठन के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

संपादकीय

राष्ट्ररक्षा में स्वदेशी हथियारों की हुंकार: ऑपरेशन सिन्दूर

ललित शर्मा

अहिंसा प्राचीन भारतीय सिद्धान्त है। यह हिन्दू, बौद्ध, जैन धर्म का प्रमुख गुण है और हिन्दू धर्म के केन्द्रीय उपदेशों में से एक है। अहिंसा बौद्ध धर्म के पांच उपदेशों में से एक है और जैन धर्म के पंच महाव्रत में इसका स्थान है। आधुनिक समय में अहिंसा के सिद्धान्त के सबसे लोकप्रिय अधिवक्ता महात्मा गांधी थे। वहीं दूसरी तरफ भगवत्गीता में श्रीकृष्ण ने धर्म की रक्षा के लिए शस्त्र उठाने की प्रेरणा दी है। यहां धर्म का अर्थ है सत्य, ईमानदारी, और नैतिक नियम से है। भारतीय संस्कृति में कहा गया है अहिंसा परम धर्म:, धर्म हिंसा तथैव च ।। अहिंसा परम धर्म है लेकिन धर्म की रक्षा के लिए की जाने वाली हिंसा उससे भी बड़ा धर्म है यहां धर्म की रक्षा में अपने राष्ट्र की रक्षा भी निहित है। हाल ही में भारत के जम्मू और कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों ने भारत के 26 निर्दोष नागरिकों की हत्या कर दी। आतंकवादियों ने महिलाओं के सामने उनके पतियों की निर्मम हत्या करी यह जख्म इतने गहरे हैं जिन्हें यह महिलाऐं कभी नहीं भुला पाएंगी। इन महिलाओं ने अपना सुहाग इस कायराना हमले में खो दिया इसके जवाब में भारत ने आतंकवादियों को मुंहतोड़ जवाब दिया और इस ऑपरेशन का नाम सिन्दूर रखा इससे बेहतर कोई नाम नहीं हो सकता है। ऑपरेशन सिन्दूर में भारतीय सेना ने पाकिस्तान में जमकर तबाही मचाई पाकिस्तान में और पीओके में 9 आतंकी ठिकानों को बर्बाद कर दिया और फिर पाक सेना पर जवाबी कारवाही करते हुए 11 एयरबेस को भी नुकसान पहुंचाया। इन 9 जगहों में पाकिस्तान के 4 आतंकी अड्डे बहावलपुर, मुर्दिके, सरजाल, और मेहमूना जौया और पीओके में 5 आतंकी अड्डे सवाई नाला, सैयदना विलाल, गुलपुर, कोटली, भीमबर और अब्बास के नाम शामिल हैं। मुर्दिके को पाकिस्तान आतंकवाद का गढ़ माना जाता है यह 200 एकड़ क्षेत्रफल में फैला है, यहां आतंकवादियों को ट्रैनिंग कैंप चलाए जाते हैं। यह लश्कर-ए-तैयबा का मुख्यालय है। पाकिस्तान के पंजाब में स्थित बहावलपुर में जैश-ए-मोहम्मद का बेस है। यहां से 26/11 आतंकी हमलों का सरगना मसूद अजहर आतंकी गतिविधियों को कन्ट्रोल करता है। इस हमले में खूंखार आतंकी मुदस्सर खादियान (लश्कर-ए-तैयबा), हाफिज मुहम्मद जमील (जैश-ए-मोहम्मद), खालिद उर्फ अबू अक्शा (लश्कर-ए-तैयबा), मोहम्मद हसन (जैश-ए-मोहम्मद) इस हमले में 100 से ज्यादा आतंकवादी मौत के घाट उतार दिए। भारतीय सेना ने अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि पाकिस्तान में एयरबेस पर किए गए हमले में 40 के आसपास सैनिक मारे गये। आज दुनिया भारतीय सेना के शौर्य और रणनीति की सराहना कर रही है। पहली बार विश्व में ऐसा अद्वितीय उदाहरण देखा गया एक परमाणु संपन्न देश (पाकिस्तान) पर किसी अन्य देश (भारत) ने घुसकर हमला किया है। भारत ने इस अभियान में एयर-लॉन्च क्रूज मिसाइलें, स्मार्ट बम और मानवरहित हवाई प्रणालियों (ड्रोन) का प्रयोग किया। स्कैल्प (स्टॉर्म रौडो) क्रूज मिसाइल यह टेरेन-फोलोइंक क्षमता और अत्याधुनिक गाइडेंस सिस्टम जिसमें न्यूनतम नागरिक नुकसान और उच्च सटीकता संभव है।

स्कैल्प ने दुर्गम क्षेत्रों में स्थित आतंकी ठिकानों को भेदा। हेमर प्रिसिजन बन है इसकी रेंज 50 से 70 किलोमीटर इसने बंकरों, जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा द्वारा प्रशिक्षण केन्द्रों को नष्ट कर दिया। लाइटिंग म्यूनिशन (कामिकाने ड्रोन) यह ड्रोन युद्धक्षेत्र में लंबे समय तक मंडरा सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर खुद को लक्ष्य पर गिरा कर विस्फोट करते हैं। इस मुकाबले में भारत ने स्वदेशी हथियारों का प्रयोग किया इसलिए यह आत्मनिर्भर भारत का युद्ध था जबकि पाकिस्तान अपने अधिकांश हथियारों के लिए विदेशों से आयातित हथियार प्रणालियों पर निर्भर है। आकाश स्वदेशी रूप से विकसित सतह से हवा में वार करने वाली मध्यम दूरी की मिसाइल है, इसने दुश्मन के लक्ष्य पर सटीकता से हमला किया आकाश मिसाइल सिस्टम भारतीय थल सेना और वायु सेना दोनों के पास उपलब्ध है। भारतीय वायुसेना ने 10 मई को ब्रह्मेस सुपरसोनिक मिसाइलों से पाकिस्तानी एयरबेस पर सटीक हमले किए जिससे पाकिस्तान के जवाबी हमला करने की शक्ति खत्म हो गई। ब्रह्मेस मिसाइल भारत के डीआरडीओ और रूस ने संयुक्त रूप से विकसित किया है। नागशस्त्र-1 यह देश की पहली स्वदेशी सुसाइड ड्रोन को ऑपरेशन सिन्दूर के दौरान भारत ने ड्रोन हमलों को रोकने के लिए इसका प्रयोग किया और यह ड्रोन सटीक स्ट्राइक के लिए जीपीएस का प्रयोग करता है। एंटी-ड्रोन-डी-4 यह डीआरडीओ और भारत इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड द्वारा निर्मित है इसने ऑपरेशन सिन्दूर के दौरान पाकिस्तानी सेना के तुर्की निर्मित ड्रोन के हमलों को रोका। स्काई-स्ट्राइकर ड्रोन यह लंबी दूरी की सटीक स्ट्राइक कर सकता है। एल्बिट के अनुसार यह ड्रोन मानवरहित विमान प्रणाली की तरह हमला करता है। यह मूक, अदृश्य और आश्चर्यजनक हमलावर के रूप स्काई-स्ट्राइक आधुनिक युद्ध के मैदान में काफी मददगार है और इसका निर्माण बेंगुलूरू की अल्फा डिजाइन और इजरायल के एल्बिट सुरक्षा प्रणालियों के बीच एक संयुक्त उद्यम के तहत इसका उत्पादन किया। ऑपरेशन सिन्दूर के दौरान एस-400 मिसाइल रक्षा प्रणाली ने पाकिस्तान की मिसाइलों और ड्रोनों को मार गिराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी इसे सुदर्शन चक के नाम से जाना जाता है। ऑपरेशन सिन्दूर में पाकिस्तान की तरफसे भारत पर फ्लेह 1 मिसाइल से हमला किया जिसे भारत ने एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम के माध्यम सिरसा में मार गिराया। इस ऑपरेशन के दौरान भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान को चीन से मिले एयर डिफेंस सिस्टम को ध्वस्त कर दिया। इस मिशन के दौरान भारत ने चीन की पीएल-15 मिसाइल, तुर्किये तुर्की ड्रोन, यीहाव और लंबे दूरी के रॉकेट, क्राड फाइटर और वाणिज्यिक ड्रोन को तबाह कर दिया इन हथियारों का मलबा भी बरामद किया है। ऑपरेशन सिन्दूर केवल एक सैन्य विजय नहीं था बल्कि, यह भारत की आत्मनिर्भर हथियार प्रणाली की वैश्विक मंच पर एक प्रभावशाली प्रस्तुति और पाकिस्तान पर तकनीकी क्षेत्र में एक निर्णायक जीत भी थी। भारत बुद्ध और गांधी की भूमि है जहां अहिंसा सर्वोच्च मूल्य है किन्तु, जब अपने देश के नागरिकों की सुरक्षा का प्रश्न उठता है तब श्रीराम का धनुष, शिव का त्रिसूल, परशुराम का फरसा, हनुमान की गदा, इन्द्र का बज्र और श्रीकृष्ण का चक प्रासंगिक हो उठते हैं। ऑपरेशन सिन्दूर ने यह सिद्ध कर दिया आत्मनिर्भर भारत की रक्षा शक्ति सिर्फ एक विचार नहीं बल्कि, सशक्त हकीकत है। स्वदेशी हथियारों ने इस अभियानों में निर्णायक भूमिका निभाकर ने केवल सैन्य सफलता सुनिश्चित की, बल्कि वैश्विक मंच पर भारत की तकनीकी क्षमता का परिचय फैलाया।

देश की मौजूदा राजनीति में न्यायपालिका की भूमिका..

प्रधान न्यायाधीश बीआर गंवई ने कहा है कि न्यायपालिका व विधायिका का मौलिक कर्त्तव्य है, देश के उस आखिरी नागरिक तक पहुंचना जिसे न्याय की जरूरत है। उन्होंने कहा, जब भी संकट आया, भारत एकजुट रहा। इसका श्रेय संविधान को दिया जाना चाहिए। इलाहाबाद उच्च न्यायालय में अधिवक्ता चैंबर भवन व मल्टीलेवल पार्किंग के उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा, संविधान लागू होने पिछत्तर वर्ष की यात्रा में विधायिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका ने सामाजिक-आर्थिक समानता लाने में बड़ा योगदान दिया है। बार व बेंच को सिक्के के दो पहलू बताते हुए मिल कर काम न करने पर रथ के आगे न बढ़ने की चर्चा भी की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिवक्ताओं की समस्याएं दर करने के लिए केंद्र के सतत प्रयासरत रहने और अधिवक्ता निधि की राशि बढ़ा कर पांच लाख करने की बात की। पेड़ों के नीचे बैठ कर काम करने वाले वकीलों की चर्चा करते हुए उन्होंने एयरकंडीशनर उनके गुस्से को ठंडा करने जैसी बात की बेशक, यह केवल उच्च न्यायालय परिसर की बात थी। देश के किसी भी मुख्यमंत्री को विचारना चाहिए कि अमूमन वकीलों तो क्या जिला जजों के लिए न तो ढंग की बैठने की जगह है, न स्वच्छ/शीतल जल है। एसी तो बहुत दूर की बात है। प्रधान न्यायाधीश द्वारा की गई मुख्यमंत्री की तारीफ में इसका ख्याल किया जाना लाजिमी था क्योंकि जिलों में कार्यरत वकीलों व न्यायाधिकारियो को भी शीप्राधिकारियों से उम्मीद होती है कि वे उनकी दशा पर भी दो बाले बोलें। यह पहला मौका था जब प्रधान न्यायाधीश के तौर पर वे इलाहाबाद गए थे। हालांकि उन्होंने अपने वक्तव्य में उन्होंने सेवानिवृत्त होने के बाद आगे की बात कहने पर भी जोर दिया। जैसा कि वे इसी वर्ष नवम्बर में रिटायर हो रहे हैं। देश की मौजूदा राजनीति में न्यायपालिका की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती जा रही है। संविधान समानता की दिशा तो दे रहा है मगर व्यावहारिक तथ्य यह भी है कि अभी भी बड़ा वर्ग आर्थिक-सामाजिक तौर पर वंचित है जिन्हें राजनीतिक दल केवल वोट बैंक के नजरिए से आंकते हैं। देश का वह आखरी नागरिक आज भी कातर भाव से शीर्ष पर बैठे लोगों को ताक रहा है जिसे न तो अपने अधिकारों का ज्ञान है, न ही उसकी तूती की आवाज में दम है।

आलेख

रक्षा परियोजनाओं में देरी टाइमलाइन

विनीत नारायण

भारतीय वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल अमरप्रीत सिंह ने 29 मई, 2025 को नई दिल्ली में आयोजित एक सभा में रक्षा परियोजनाओं में देरी को लेकर महत्त्वपूर्ण बयान दिया। उन्होंने कहा, 'टाइमलाइन बड़ा मुद्दा है। मेरे विचार में एक भी परियोजना ऐसी नहीं है, जो समय पर पूरी हुई हो। कई बार हम कॉन्ट्रैक्ट साइन करते समय जानते हैं कि यह सिस्टम समय पर नहीं आएगा। फिर भी हम कॉन्ट्रैक्ट साइन कर लेते हैं।' यह बयान भारत की रक्षा आत्मनिर्भरता की दिशा में चल रही प्रक्रिया पर सवाल उठाता है। एयर चीफ मार्शल सिंह ने अपने बयान में विशेष रूप से हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लि. द्वारा तेजस एमके1ए फाइटर जेट की डिलीवरी में देरी का उल्लेख किया। यह देरी 2021 में हस्ताक्षरित 48,000 करोड़ रु पये के कॉन्ट्रैक्ट का हिस्सा है, जिसमें 83 तेजस एमके1ए जेट्स की डिलीवरी मार्च, 2024 से शुरू होनी थी, लेकिन अभी तक एक भी विमान डिलीवर नहीं हुआ है। उन्होंने तेजस एमके 2 और उन्नत मध्यम लड़ाकू विमान (एएमसीए) जैसे अन्य महत्त्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स में प्रोटोटाइप की कमी और देरी का भी जिक्र किया। यह बयान ऐसे समय में आया है जब भारत और पाकिस्तान के बीच 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद, जिसे उन्होंने 'राष्ट्रीय जीत' करार दिया गया है, उनके बयान का महत्त्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि यह रक्षा क्षेत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही की आवश्यकता को रेखांकित करता है। पहली बार नहीं है जब एचएएल की आलोचना हुई है। फरवरी, 2025 में एयरो इंडिया 2025 के दौरान एयर चीफ मार्शल सिंह ने एचएएल के प्रति अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा था, 'मुझे एचएएल पर भरोसा नहीं है, जो बहुत गलत बात है।' यह बयान एक अनौपचारिक बातचीत में रिकॉर्ड हुआ था, लेकिन इसने रक्षा उद्योग में गहरे मुद्दों को उजागर किया। रक्षा परियोजनाओं में देरी के कई कारण हैं, जिनमें से कुछ संरचनात्मक और कुछ प्रबंधन से संबंधित हैं। तेजस रूद्य1 की डिलीवरी में देरी का एक प्रमुख कारण जनरल इलेक्ट्रिक से इंजनों की धीमी आपूर्ति है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में समस्याएं विशेष रूप से 1998 के परमाणु परीक्षणों के बाद भारत पर लगे प्रतिबंधों ने एचएएल की उत्पादन क्षमता को प्रभावित किया है। सिंह ने एचएएल को 'मिशन मोड' में न होने के लिए आलोचना की।उन्होंने कहा कि एचएएल के भीतर लोग अपने-अपने साइलो में काम करते हैं, जिससे समग्र तस्वीर पर ध्यान नहीं दिया जाता। यह संगठनात्मक अक्षमता और समन्वय की कमी का संकेत है। सिंह ने इस बात पर भी जोर दिया कि कई बार कॉन्ट्रैक्ट साइन करते समय ही यह स्पष्ट होता है कि समय सीमा अवास्तविक है। फिर भी, कॉन्ट्रैक्ट साइन कर लिए जाते हैं, जिससे प्रक्रिया शुरू से ही खराब हो जाती है। यह एक गहरी सांस्कृतिक समस्या को दर्शाता है, जहां जवाबदेही की कमी है। हालांकि सरकार ने एएमसीए जैसे प्रोजेक्ट्स में निजी क्षेत्र की भागीदारी को मंजूरी दी है, लेकिन अभी तक रक्षा उत्पादन में निजी क्षेत्र की भूमिका सीमित रही है। इससे एचएएल और डीआरडीओ जैसे सार्वजनिक उपक्रमों पर अत्यधिक निर्भरता बढ़ती है, जो अक्सर समय सीमा पूरी करने में विफल रहते हैं। भारत की रक्षा खरीद प्रक्रिया जटिल और समय लेने वाली है। डिजाइन और विकास में देरी, जैसे कि तेजस एमके 2 और एएमसीए के प्रोटोटाइप की कमी, भी परियोजनाओं को और पीछे धकेलती है। रक्षा परियोजनाओं में देरी का भारतीय वायुसेना की परिचालन तत्परता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। वर्तमान में भारतीय वायु सेना के पास 42.5 स्क्वाड्रनों की स्वीकृत ताकत के मुकाबले केवल 30 फाइटर स्क्वाड्रन हैं। तेजस एमके1ए जैसे स्वदेशी विमानों की देरी और पुराने मिग-21 स्क्वाड्रनों का डीकमीशनिंग इस कमी को और गंभीर बनाता है। देरी से रक्षा आत्मनिर्भरता की दिशा में भारत की प्रगति भी प्रभावित होती है। सिंह ने कहा, 'हमें केवल भारत में उत्पादन की बात नहीं करनी चाहिए, बल्कि डिजाइन और विकास भी भारत में करना चाहिए।' देरी न केवल भारतीय वायुसेना की युद्ध क्षमता को कमजोर करती है, बल्कि रक्षा उद्योग में विश्वास को भी प्रभावित करती है। 'ऑपरेशन सिंदूर' जैसे हालिया सैन्य अभियानों ने स्पष्ट किया है कि आधुनिक युद्ध में हवाई शक्ति की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, और इसके लिए समय पर डिलीवरी और तकनीकी उन्नति अनिवार्य है। एयर चीफ मार्शल अमरप्रीत सिंह के बयान ने रक्षा क्षेत्र में सुधार की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित किया है।

राजनीति में नैतिकता का क्षरण ना हो

संजीव ठाकुर

महात्मा गांधी जी ने कहा था कि सिद्धांतों के बिना राजनीति पाप है। इसके अलावा प्रसिद्ध विचारक हेनरी एडम ने कहा है कि 'मानव स्वभाव का ज्ञान ही राजनैतिक शिक्षा का आदि और अंत है' भारतीय राजनीति का उद्भव प्राचीन काल से हुआ है, किंतु इसकी प्रकृति में परिवर्तन तब आया जब भारत विश्व स्तर पर एक आधुनिक राज्य के रूप में स्थापित हुआ। भारतीय राजनीति में स्वतंत्रता के पूर्व नैतिकता एवं संस्कृति की एकता के दम पर स्वतंत्रता संग्राम पर विजय प्राप्त की थी। विवेकानंद, सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, सरदार पटेल, लाला लाजपत राय और न जाने कितने महान लोगों ने ब्रितानी हुकूमत को देश से भगाया था। देश का स्वतंत्रता संग्राम जनप्रतिनिधियों को नैतिकता के पालन के लिए प्रोत्साहित करता रहा है। जब भारत में स्वतंत्र लोकतांत्रिक राजनीति का आरंभ हुआ तो नैतिकता का क्षरण आरंभ हो गया। राजनीति धीरे-धीरे सिद्धांत से विमुख होती गई। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात यह माना जाता रहा है कि राजनीति में अनैतिकता के पनपने के दो प्रमुख कारण माने गए धनबल और बाहुबल। राजनीति में ऐसा कहा जाता है कि जिसके पास धन होता है उसके पास बल भी होता है, और भारतीय राजनीति में और कई प्रदेशों के संदर्भ में यह बात सर्वथा उचित प्रतीत होती है। भारतीय राजनीति में धनबल और बाहुबल का नकारात्मक प्रभाव नैतिकता के पतन के रूप में सामने आया है। स्वतंत्रता के पश्चात राजनेताओं में स्वयं के लिए धन एकत्र करना एवं येन-केन-प्रकारेण सत्ता स्थापित करने के प्रयास के कारण नैतिकता धीरे-धीरे स्खलित होती गई है। नेताओं का बेईमानी और भ्रष्ट कार्य में लिप्त होना भी राजनीति में नैतिकता के पतन का प्रमुख कारण है और यही कारण है कि आज अधिकतर राजनेताओं पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगते हैं। सर्वविदित है कि सार्वजनिक संपत्ति को अपनी स्वयं की संपत्ति बनाने की होड़ में राजनेताओं को कर्तव्य पथ से विमुख होते देखा गया है। राजनीति में राजनेताओं ने इसे संपत्ति कमाने का जरिया ही मान लिया है। सार्वजनिक संसाधनों का पूरा नियंत्रण राजनेताओं के पास होता है। इसका उपयोग वे अपने संसदीय, विधानसभा क्षेत्र के लिए करते हैं। राजनीति में भाई-भतीजावाद सामान्य लक्षण है। कोई भी राजनेता आज यह चाहता है कि योग्यता हो ना हो; बड़ा पद उसके भाई, भतीजे ,पत्नी, बेटे आदि को मिल जाए। इतना ही नहीं कई बार सगे-संबंधियों के अपराधी होते हुए भी राजनीतिक पद अथवा चुनावी टिकट दिलाने का प्रयास करते हैं। भारतीय राजनीति में क्रोनी कैपिटिलिज्म ठीक तरीके से पैर जमा चुका है। इसमें उद्योगपति राजनीतिक चंदा का हवाला देते हुए राजनेताओं से देश की नीतियों को अपने पक्ष में करवा लेते हैं और इस तरह जनता का शोषण शुरू हो जाता है। भारतीय राजनीति में इस तरह के आरोप लंबे समय से लगते आ रहे हैं। राजनीति में उच्च नैतिक मूल्यों का महत्त्व घटने के साथ-साथ राजनीतिक मापदंड शासन को राजनीति आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में नकारात्मक रूप से प्रभावित करता जा रहा है। राजनेताओं से अपेक्षा होती है कि वह समाज के प्रति प्रतिबद्ध होकर काम करें किंतु अनैतिक राजनीति इस प्रतिबद्धता में एक बड़ी बाधा है, और इसके साथ ही राजनेता अनैतिक प्रथाओं का समावेश कर अपनी राजनीतिक रोटी सेकने में कतई गुरेज नहीं करते हैं। इतना ही नहीं राजनीति में आरोप-प्रत्यारोप की भाषा भी निम्न स्तर तथा अनैतिक होते जा रही है, और यही कारण है कि राजनीति में अयोग्य लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। विडंबना यह है कि भारत में प्रत्येक पेशेवर व्यक्ति के लिए कार्य करने के लिए योग्यता निर्धारित की गई है, किंतु जनता पर शासन करने वाले जनप्रतिनिधियों की कोई भी योग्यता निर्धारित नहीं की गई है। संविधान में ही योग्यता निर्धारित नहीं है, लेकिन संसद द्वारा पारित जनप्रतिनिधि अधिनियम 1991 में भी इसका कोई प्रावधान नहीं किया गया। इसीलिए संविधान तथा इस अधिनियम में जनप्रतिनिधियों की शैक्षणिक योग्यता एवं अपराधिक निर्योग्यता का प्रावधान किया जाना चाहिए, जिससे राजनीति थोड़ी साफ-सुथरी हो और नैतिकता तथा आत्मबल में वृद्धि हो। पढ़े लिखे, शिक्षित लोगों की राजनीति में आने से वहां का वातावरण थोड़ा शुद्ध होने की संभावना बनती है और देश के विकास को भी बल मिलता है। स्वतंत्रता के पश्चात राजनेताओं में स्वयं के लिए धन एकत्र करना एवं येन-केन-प्रकारेण सत्ता स्थापित करने के प्रयास के कारण नैतिकता धीरे-धीरे स्खलित होती गई है। नेताओं का बेईमानी और भ्रष्ट कार्य में लिप्त होना भी राजनीति में नैतिकता के पतन का प्रमुख कारण है और यही कारण है कि आज अधिकतर राजनेताओं पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगते हैं। सर्वविदित है कि सार्वजनिक संपत्ति को अपनी स्वयं की संपत्ति बनाने की होड़ में राजनेताओं को कर्तव्य पथ से विमुख होते देखा गया है। राजनीति में राजनेताओं ने इसे संपत्ति कमाने का जरिया ही मान लिया है। यह बात महत्त्वपूर्ण है कि सामान्यता अपराधी प्रवृत्ति के लोगों को विधानसभा या लोक सभा में टिकट नहीं दी जानी चाहिए। प्रायः देखा गया है कि अनैतिकता की शुरु आत अधिक धन के संचालित होती है। इसीलिए सभी राजनीतिक दलों के प्राप्त चंदे को ऑडिट के दायरे में लाया जाना चाहिए। सदनों की नियमावली में परिवर्तन करते हुए सूचना के अधिकार के अंतर्गत जिसमें पार्टियों की गतिविधियां भी आरटीआई के दायरे में लाई जा सके। हाल ही में संसद की निष्पादन क्षमता में भारी कमी आई है, क्योंकि प्रत्येक राजनीतिक दल संसद का प्रयोग राजनीतिक लाभ के लिए करने लगे हैं, इसीलिए नियमावली में परिवर्तन के साथ इस पर लगाम लगाई जानी चाहिए। इससे राजनीति में नैतिकता का क्षरण ना हो।

क्रिकेटर विराट कोहली के सपने साकार

मनोज चतुर्वेदी

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने पहली बार आईपीएल खिताब जीता जरूर पर इसे विराट कोहली के सपने के साकार होने के तौर पर ही लिया गया। इस कारण फाइनल मैच का परिणाम आने पर अहमदाबाद के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम पर बने माहौल ने 2011 में वानखेड़े स्टेडियम में आईसीसी वनडे विश्व कप जीतने पर बने माहौल की यादें ताजा कर दीं। उस वक्त सारी टीम सचिन तेंदुलकर के विश्व कप जीतने के सपने के साकार होने पर उन्हें कंधे पर उठा कर घुमा रही थी। वजह यह थी कि विराट 2008 से इस टीम को खिताब जिताने के लिए प्रयास करते रहे थे पर खिताब से दूरी खत्म होकर नहीं दे रही थी। इस खिताब का विराट को किस बेसब्री से इंतजार था, इसे उनकी भावनाओं से समझा जा सकता है। जॉश हेजलवुड के आखिरी ओवर की पहली दो गेंदों पर छक्का लगते ही आरसीबी का खिताब जीतना पक्का हो गया था। खिताब तय होते ही विराट की आंखें खुशी से नम हो गई और खेल खत्म होते ही वह मैदान पर सिर झुका कर अपनी भावनाएं बयां करते रहे। जिस काम को अनिल कुंबले, डेनियल विटोरी और खुद विराट कप्तान रहते नहीं कर पाए थे, उसे रजत पाटीदार ने कर दिखाया। इस तरह अब मुंबई इंडियंस, चेन्नई सुपर किंग्स, कोलकाता नाइट राइडर्स, डेक्केन चार्जर्स, राजस्थान रॉयल्स, सनराइजर्स हैदराबाद और गुजरात टाइटंस के साथ आरसीबी का भी नाम आईपीएल खिताब जीतने वाली टीमों में शामिल हो गया है। आरसीबी का यह फाइनल खेलने का चौथा मौका था जिसमें से 2009 और 2016 में तो वह बहुत ही मामूली अंतर से पिछड़ कर खिताब जीतने से रह गई थी। 2009 के फाइनल में उसे छह रनों से और 2016 में आठ रनों से हार का सामना करना पड़ा था। हां, वह 2011 के फाइनल में जरूर बुरी तरह से हार गई थी। पर इन सबकी कमी उसने पंजाब किंग्स को छह रनों से हरा कर पूरी कर दी। आरसीबी का खिताबी सपना तो पूरा हो गया पर पंजाब किंग्स का सपना अधूरा बना हुआ है। अय्यर जिस तरह से कोच रिकी पोंटिंग के साथ मिल कर टीम को तस्वीर बदलने में सफल हुए हैं और उन्होंने दूसरे क्वालिफायर में जिस तरह से मुंबई इंडियंस की चुनौती तोड़ी, उससे वह भी खिताबी मजबूत दावेदार मानी जा रही थी पर शायद किस्मत में चैंपियन बनना लिखा नहीं था। इस आईपीएल खिताब का आरसीबी और विराट को इंतजार था, उसी तरह लग रहा था कि नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में मौजूद

दर्शक भी चाहते थे कि विराट की पिछले 17 सालों से चली आ रही दूरी खत्म हो। पूरा स्टेडियम आरसीबी की जर्सी पहने पटा पड़ा था। आरसीबी के पक्ष में चौका या छक्का लगने या फिर विकेट मिलने पर स्टेडियम शोर से गूंज उठता था। आरसीबी टीम ने विराट और उनके चहेते दर्शकों को निराश नहीं किया। खिताब जीतने पर भावनाओं से भरे विराट ने कहा, 'यह जीत जितनी टीम के लिए है, उतनी ही प्रशंसकों के लिए भी है। यह पूरे 18 सालों का इंतजार था। मैंने इस टीम को अपना युवा समय, अपना सर्वश्रेष्ठ दौर और अपना अनुभव सब कुछ दिया। हर सीजन इसे जीतने की कोशिश की और अपनी सारी ताकत लगा दी। अब जाकर इसे हासिल करना अविसनीय अहसास है। कभी नहीं सोचा था कि यह दिन आएगा। मैं आखिरी गेंद के बाद भावनाओं में बह गया। अपनी सारी ऊर्जा झोंक दी और अब जो महसूस हो रहा, वो बयां करना मुश्किल है। वाकई कमाल का अहसास है।' आरसीबी के विजेता बनने पर एक और तस्वीर देखने को मिली। आरसीबी की सफलताओं में अहम भूमिका निभाने वाले एबी डिविलियर्स टीम के विजेता बनते ही मैदान में दौड़कर आए और विराट को गले लगा लिए। क्रिस गेल भी वहां पहुंच कर विराट को गले लगाकर बधाई देते नजर आए। इसमें कोई दो राय नहीं कि आरसीबी के महान खिलाड़ियों की सूची में विराट का नाम सबसे ऊपर है। पर डिविलियर्स और गेल का नाम विराट के बाद होने में शायद ही किसी को शक हो। विराट ने कहा, 'इन दोनों ने फ्रेंचाइजी के लिए जो किया है, वह जबर्दस्त है। इसलिए यह जीत जितनी मेरी है, उतनी ही इन दोनों की भी है। इसलिए ट्रॉफी को हम एक साथ उठाएंगे।' अय्यर भले ही पंजाब किंग्स को खिताब नहीं दिला सके पर वह तीन टीमों को फाइनल में पहुंचाने वाले पहले कप्तान बन गए हैं। पिछले साल केकेआर को विजेता बना चुके हैं और इससे पहले दिल्ली केपिटल्स उनकी अगुआई में फाइनल में पहुंची थी। पर इन सबकी कमी उसने पंजाब किंग्स को छह रनों से हरा कर पूरी कर दी। आरसीबी का खिताबी सपना तो पूरा हो गया पर पंजाब किंग्स का सपना अधूरा बना हुआ है। अय्यर जिस तरह से कोच रिकी पोंटिंग के साथ मिल कर टीम को तस्वीर बदलने में सफल हुए हैं और उन्होंने दूसरे क्वालिफायर में जिस तरह से मुंबई इंडियंस की चुनौती तोड़ी, उससे वह भी खिताबी मजबूत दावेदार मानी जा रही थी पर शायद किस्मत में चैंपियन बनना लिखा नहीं था।आरसीबी को विजेता बनने पर 20 करोड़ और पंजाब किंग्स को उपविजेता रहने पर 13.5 करोड़ का इनाम मिला। मुंबई को 7 करोड़ और गुजरात टाइटंस को 6.5 करोड़ रुपये का इनाम मिला।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, शुक्रवार 13 जून 2025
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

विचित्र बाते प्रणेता सर्वार्थ सागर जी महाराज ने कहा- हर धोखा एक पाठ है और हर पाठ एक नई शक्ति देता है

विदिशा (विश्व परिवार)। अरिहंत जैन, भिंड ने अवगत कराया कि पट्टाचार्य भगवन विशुद्ध सागर महाराज जी ससंघ विदिशा में विराजमान हैं। विचित्र बाते प्रणेता सर्वार्थ सागर जी महाराज जी ने विदिशा में अपने प्रवचन में कहा कि, अरे भाई! दिल धोखे में है और धोखेबाज दिल में है। दिल जब किसी पर भरोसा करता है, तो वो आँखों से नहीं- भावनाओं से देखता है। पर जब वही दिल धोखे में आ जाता है, तब आँखें खुलती हैं, और समझ आती है कि हर चमकती चीज़ सोना नहीं होती। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि भरोसा करना छोड़ दो- इसका मतलब ये है कि सीखो कि किस पर भरोसा करना है। धोखा देने वाला तो कुछ पल का खिलाड़ी होता है, पर धोखा सहने वाला इंसान अगर टूटे नहीं, तो वो जीवन का असली विजेता बनता है। हर धोखा एक पाठ है- और हर पाठ एक नई शक्ति देता है। तो ऐ दिल! तू दुखी मत हो। तू टूटा नहीं है, तू मजबूत हुआ है। अब तू जानता है कि किसे जगह देनी है, और किसे खुद से दूर रखना है। अंत में बस यही कहूँगा कि जो दिल तोड़ते हैं, उन्हें माफ कर दो और जो दिल जोड़ते हैं, उन्हें कभी मत खोओ। -**अभिषेक अशोक पाटील**

जैन सोश्यल ग्रुप मेट्रो ने किये सेवा कार्य, गौ सेवा के साथ पक्षियों को चुग्गा डाला

जयपुर (विश्व परिवार)। बन्धुत्व से प्रेम एवं प्रेम के साथ सेवा के उद्देश्य को लेकर मानव व समाज सेवा के क्षेत्र में कार्यरत विश्व की सबसे बड़ी दम्पति सदस्यों की संस्था जैन सोश्यल ग्रुप्स इन्टरनेशनल फेडरेशन मुम्बई की 196 वीं शाखा जैन सोश्यल ग्रुप मेट्रो जयपुर के तत्वावधान में सेवा कार्य किये गये। ग्रुप संस्थापक अध्यक्ष विनोद-दीपिका जैन कोटखावदा ने बताया कि सर्वप्रथम दुर्गापुरा स्थित गौशाला में दम्पति सदस्यों द्वारा गौ सेवा की गई। इस मौके पर गायों को गुड़, सब्जियां, फल, हरा चारा खिलाया गया। इस मौके पर मूक पक्षियों को चुग्गा भी डाला गया। गर्मी के इस मौसम में शीतल जल पिलाकर सेवा की गई। पक्षियों के लिए लगे हुए परिन्डो में पानी भरा गया। इस मौके पर विनोद जैन कोटखावदा, सुशील बाकलीवाल माधोराजपुरा, चेतन जैन निमोडिया, सुशील जैन टोडारायसिंह, मुकेश पाटनी, नरेश बाकलीवाल, सुनील पाटनी, सावन सेठी, भाग चन्द पाटनी,नरेश जैन, जय कुमार जैन, दीपिका जैन कोटखावदा, शालू बाकलीवाल, कविता जैन अम्बिका सेठी, रेखा पाटनी,रमा पाटनी, नेहा जैन, व अन्य सदस्यों ने गौ सेवा कार्य किया एवं पक्षियों को चुग्गा डाला।

मंदिर-मूर्ति विज्ञान पर पहली वैश्विक कार्यशाला सम्पन्न

सैदपुर/पठारी (विश्व परिवार)। विदिशा जिले के पठारी क्षेत्र अंतर्गत सैदपुर गांव में 3 जून से 5 जून 2025 तक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय मूर्ति कला संगोष्ठी का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य मुनि श्री दुर्लभ लसागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में दीप प्रज्वलन एवं मंगलाचरण के साथ हुआ। संगोष्ठी के संयोजक व शास्त्री परिषद के महामंत्री ब्र. जयकुमार जी निशान्त ने बताया कि संगोष्ठी का उद्देश्य प्राचीन भारतीय मूर्तिकला परंपरा को समर्पित चिंतन, विमर्श और आधुनिक संदर्भों में उसकी पुनर्परिभाषा रहा। आयोजन आचार्य श्री समयसागर जी महाराज के आशीर्वाद, निर्यापक मुनि श्री अभयसागर जी महाराज की प्रेरणा व मुनि श्री दुर्लभ सागर जी के सान्निध्य में सफलता पूर्वक संपन्न हुई। प्राचीन जैन मंदिर एवं मूर्तिकला परंपरा को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से मंदिर एवं मूर्ति विज्ञान पर इतिहास की पहली वैश्विक कार्यशाला का भव्य आयोजन सैदपुर (पठारी) में किया गया। कार्यशाला में जैन आगम, मूर्ति निर्माण, मूर्ति विज्ञान की वैज्ञानिक विधियाँ और प्रतिष्ठा के शुभ मुहूर्त पर विस्तार से शोधपूर्ण प्रस्तुतियाँ दी गईं। मुनि श्री के चिंतन, संयोजन, एवं कार्यशैली ने उपस्थित अंतरराष्ट्रीय विद्वानों एवं प्रशिक्षणार्थियों को गहन चिंतन हेतु प्रेरित किया। -**डॉ. सुनील जैन संचय**

श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर अशोका रत्न में भक्तामर विधान सम्पन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। आज दिनांक 12 जून 2025 गुरुवार, आषाढ बदी एकम श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर अशोका रत्न में प्रात: श्रीजी के प्रक्षाल का सौभाग्य विपुल जैन, राकेश लुहाड़िया एवं अरविन्द जैन को प्राप्त हुआ।

सर्वप्रथम मंगलाष्टक व सिद्ध भक्ति के पठन से अभिषेक क्रिया प्रारम्भ हुई, पाण्डुकशिला पर प्रथम तीर्थंकर 1008 भगवान श्री आदिनाथ जी की मूरत मन्त्रोंचार के द्वारा विराजमान किया गया, प्रथम कलश व चार कलशों से अभिषेक किया गया, भगवान को अर्घ समर्पित कर, विश्व के प्राणी मात्र के जीवन मे शांति,खुशी, समृद्धि का संचार हो इस हेतु बीजाक्षरों से युक्त मन्त्रों से शांतिधारा की गयी शांतिधारा का सौभाग्य श्रावक श्रेष्ठी संदीप जैन एवं कोलकाता निवासी अमित जैन एवं अनुराग काला को प्राप्त हुआ, शांतिधारा का पठन ऋचा संदीप जैन द्वारा किया गया, पंच परमेष्ठी, शान्तिनाथ भगवान, आचार्य विद्यासागर जी की आरती संपन्न की गयी, नित्य नियम एवं मुलनायक भगवान शान्तिनाथ जी की पूजा के साथ भक्तामर विधान किया गया, 48 रिद्धि मंत्रो के जाप के साथ शांति मन्त्र का जाप हुआ तथा विसर्जन हुआ।

मुनि श्री जयंत सागर जी महाराज का अवतरण दिवस दौंड महाराष्ट्र में भक्तो द्वारा भक्तिपूर्वक मनाया जायेगा

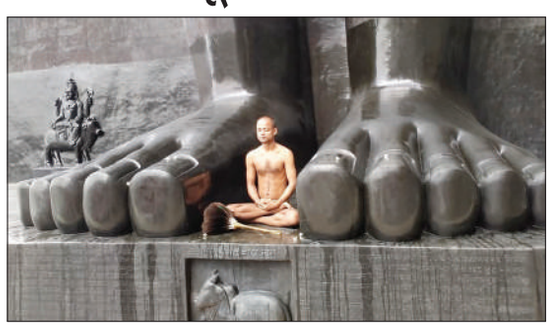

दौंड/महाराष्ट्र (विश्व परिवार)। प.पू. मुनि श्री 108 सारस्वत सागर जी महाराज, प.पू. मुनि श्री 108 जयंत सागर जी महाराज, प.पू. मुनि श्री 108 सिद्ध सागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री 105 श्रुतसागर जी महाराज का विहार नांद्रे की और चल रहा है जिसमे मुनि श्री ससंघ दौंड महाराष्ट्र में विराजमान है।

गुरुदेव के परमभक्त श्री अभिषेक अशोक पाटील, कोल्हापूर ने अवगत कराया की पट्टाचार्य विशुद्ध सागर महाराज जी के लघुनंदन श्रमण मुनि जयंत सागर महाराज जी का अवतरण दिवस दौंड (महाराष्ट्र) में 14 जून 2025 को भक्तीपूर्वक मनाया जाएगा। भारत कि पावन वसुंधरा पर अनेकों ऋषी मुनीयों ने अपनी पावन चरण धुलि से इस वसुमती को परम पवित्र किया है और समाज को एक नई दिशा प्रदान कि है।

आज से 29 वर्ष पूर्व सौभाग्य शाली दंपत्ति श्रीमान सुरेंद्र कुमार जी जैन एवं श्रीमति अनिता जी जैन के आंगन में खुशियां छाई थी। 14 जून 1996 को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी, और उस सुंदर बालक का माता पिता ने नाम रखा विशाल।

आचार्य भगवन विशुद्ध सागर जी महाराज जी के करकमलोसे 6 नवम्बर 2022 को रायपुर (छत्तीसगढ) में मुनी दीक्षा धारण करके आपके गुरू द्वारा आपका नाम जयंत सागर जी रखा गया।

जयंत सागर जी महाराज आपने पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी के आशीष से सभी जगह अपूर्व जिनधर्म की प्रभावना करते हुऐ, हमेशा गुरु आज्ञा को सब कुछ माना हैं। -**अभिषेक अशोक पाटील**

संपूर्ण व्यक्ति विकास पर शिक्षकों को ध्यान देना होगा : अर्पिता राठौर

महाराष्ट्र मंडल के संत ज्ञानेश्वर स्कूल में टीचर्स डेवलपमेंट वर्कशाप में दिए जा रहे महत्वपूर्ण टिप्स

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रतियोगी परीक्षा के लिए बच्चों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आधारित प्रश्नों की तैयारी करानी चाहिए। इसी तरह केस स्टडी पर आधारित, क्षमता पर आधारित सवालों की तैयारी भी बच्चों से करानी चाहिए। इससे भी बढ़कर ब्लूम टेक्सानॉमी बेस्ट सवालों पर आधारित अर्थात ऐसे सवाल, जिसके सारे विकल्प सही हो लेकिन उनमें से सर्वाधिक सही उत्तर देने की तैयारी बच्चे करें, तो बेहतर होगा। शिक्षाविद अर्पिता राठौर ने महाराष्ट्र मंडल के संत ज्ञानेश्वर स्कूल में टीचर्स डेवलपमेंट वर्कशॉप में इस आशय के विचार व्यक्त किए।

अर्पिता ने कहा कि शिक्षकों को अपने विषय पर एकदम स्पष्ट होना चाहिए। उनका सबसे बड़ा गोल मानवीय होना चाहिए। इसी तरह उन्हें जुनूनी होना चाहिए। बच्चों के ओवर आल पर्सनालिटी डेवलपमेंट की जिम्मेदारी उनकी ही होती है। शिक्षक को न सिर्फ शैक्षणिक बल्कि सामाजिक, स्वास्थ्यगत मामलों में भी बच्चों के विकास में सहायक होना चाहिए।

श्रीमती राठौर के अनुसार हर एक बच्चे की अपनी क्षमता, पहचान और सामर्थ्य होता है। इसके अनुरूप ही हमें बच्चों को ट्रिट करना चाहिए। उन्होंने जोर देकर कहा कि वर्तमान परिवेश में बच्चों से ज्यादा अभिभावकों के काउंसिलिंग की जरूरत है। जरूरी नहीं कि आपकी तरह ही आपका बच्चा भी डॉक्टर, इंजीनियर, सीएम या प्रोफेशनल ही बने। बच्चों की क्षमता को सबसे पहले पहचानने की जिम्मेदारी अभिभावकों की ही है और अपनी महत्वाकांक्षाओं का बोछ उन पर लादने की जरूरत नहीं है।

अर्पिता राठौर ने कहा कि शिक्षकों को सबसे अधिक सहयोगी होना चाहिए, चाहे अपने सहयोगी शिक्षक स्टाफ के साथ हो, बच्चों के साथ हो या फिर बच्चों के अभिभावकों के साथ हो। हमने कोई सवाल क्लास रूप में पूछा है तो जरूरी नहीं कि उसका जवाब सभी बच्चों को मालूम हो। जिसे उत्तर नहीं मालूम, उसने कोई गलत जवाब दिया हो या शरारत की हो, तो जरूरी नहीं कि हम उसे क्लास रूम से ही बाहर निकाल दें, बल्कि उसे क्लास रूम में ही रखकर इंगेज करें। हमारे पढ़ाने का तरीका कुछ तरह का हो कि अधिकाधिक बच्चों के लिए वो समझ में आए। जिन्हें न भी आए तो उन्हें दोबारा समझाने की जरूरत होगी।

अर्पिता मैडम ने कहा कि नान स्टाप 40 मिनट पढ़ाने से बच्चे बोर होने लगते हैं और उनका ध्यान भी भटकता है।

अशोका गार्डन भोपाल में हुई गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ससंघ की भव्य मंगल आगवानी

लोभ के कारण बढ़ रही हिंसा की प्रवत्ति : विज्ञा श्री माताजी

भोपाल (विश्व परिवार)। श्रमणी गणिनी आर्यिका गुरु मां विज्ञाश्री माताजी ससंघ की भव्य मंगल आगवानी अशोका गार्डन भोपाल में हुई। सभी ने हर्षोल्लास पूर्वक गाजे बाजे के साथ माताजी ससंघ का प्रवेश करवाया प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया आर्य का संघ ने जिनालय के मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ की वंदना की हर घर के द्वार पर पूज्य माताजी के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य भी भक्तों ने प्राप्त किया। मंदिर दर्शन के पश्चात माताजी के मुखारविंद से अभिषेक शांतिधारा निर्विघ्न संपन्न हुई। तत्पश्चात पूज्य माताजी का मंगल उद्बोधन हुआ।

माताजी ने उपस्थित जनसमूह को धर्मोपदेश देते हुए कहा कि - शरीर व मन के समस्त रोग लोभ से पैदा होते हैं। लोभ की मात्रा घटती नहीं, मगर दिनों दिन घटने की बजाय निरंतर बढ़ती चली जाती है। प्रभु महावीर ने कहा ज्यों-ज्यों लाभ होता है त्यों-त्यों लोभ और अधिक मात्रा में बढ़ता चला जाता है। आज तक जितने भी युद्ध - मन मुटाव - हिंसा - अत्याचार या अनाचार हुए हैं उसके पीछे एक ही कारण लोभ का रहा है। इंसान की इच्छाएं अनंत होती हैं जो कदापि पूर्ण नहीं हो पाती। इंसान खाली हाथ आता है एवं एक दिन खाली हाथ ही प्रस्थान कर जाता है। लोभ तन का, मन का, धन का, कुटुम्ब कबिला, जमीन जायदाद का या पद प्रतिष्ठा का नानाभांति जीवन में प्रगट होता रहता है। मन में हजारों कल्पनाएं उभरती रहती है। प्रभु महावीर ने इस लोभ को जीतने के लिए संतोष का मार्ग बतलाया जैन श्रावकों के लिए परिग्रह परिणाम व्रत की व्याख्या की। वस्तुओं की मर्यादाओं से ही मन पर काबू पाया जा सकता है। राजा महाराजाओं के युद्ध इसी लोभ के चलते हुए हैं। खाने को कहा जाता है तो दो रोटी की जरूरत पड़ती है। फिर पता नहीं इंसान इतना लोभ में क्यों डूबा जा रहा है। कृपण व्यक्ति के पास लक्ष्मी आ भी जाए फिर भी वह इसका उपयोग नहीं कर पाता इस अवसर पर अध्यक्ष सचेंद्र गुड्डू और समाजसेवी हरीश चंद्र के एल जैन संजय सहारा अजीत जैन अभय बंसल समय जैन अमिता जैन मणि जैन पूर्ति जैन कल्पना जैन शिल्पा जैन रानी जैन सहित समाज के अन्य वरिष्ठजन मौजूद थे,

वार्ड नं. 45 में जीवन कालोनी तथा अटल आवास के पास सामुदायिक भवन बनाने महापौर ने किया भूमिपूजन

आंगनबाडी में नवजात शिशुओ का हुआ अन्नप्राशन एवं गर्भवती महिलाओ को सुपोषण कीट वितरण

राजनांदगांव (विश्व परिवार)। नगर विकास की कडी में नगर निगम द्वारा मूलभूत सुविधा रोड नाली के अलावा सामुदायिक भवन, उद्यान, मुक्तिधाम उन्नयन, तालाब सौदर्यीकरण कार्य कराया जा रहा है। इसी कडी में आज महापौर श्री मधुसूदन यादव ने वार्ड नं. 45 के जीवन कालोनी तथा अटल आवास 150 क्वाटर के पास अधोसंरचना पर्यावरण उपकर निधि अंतर्गत 10-10 लाख रूपये की लागत के सामुदायिक भवन निर्माण के लिए दोनो स्थानो में अलग अलग आयोजित कार्यक्रम में भूमिपूजन पूजा अर्चना कर श्रीफल फोड कर किया। इस अवसर पर महापौर परिषद के प्रभारी सदस्य श्री आलोक श्रोती, श्रीमती वर्षा सिन्हा, श्रीमती केवरा राय, श्री डिलेश्वर साहू, वार्ड पार्षद श्री दुरेन्द्र साहू, पार्षद श्रीमती श्रुति लोकेश जैन, श्री रवि सिन्हा, श्रीमती अमृता सिन्हा, श्री सतीश साहू, श्री सेवक उईके, श्री शेखर यादव, श्री शेखर लश्करे, श्रीमती खेमीन राजेश यादव, पूर्व पार्षद श्री अतुल रायजादा, श्री शरद सिन्हा, श्री विजय राय, पार्षद प्रतिनिधि श्री पंकज कुंजरेकर, सामाजिक कार्यकर्ता श्री सुमित भाटिया, श्रीमती आरती पवार, श्री लाल मुनाई विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम में महापौर सहित अतिथियों ने आंगन बाडी में गर्भवति महिलाओ को सुपोषण कीट का वितरण कर नवजात शिशुओ का अन्न प्रासन कराया।

कार्यक्रम में महापौर श्री यादव ने कहा कि विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह एवं सांसद श्री संतोष पाण्डे की अनुशंसा पर शासन द्वारा मूलभूत सुविधा रोड नाली निर्माण सहित राज्य प्रवर्तित योजनांतर्गत सामुदायिक भवन, मुक्तिधाम उन्नयन, तालाब सौदर्यीकरण, उद्यान निर्माण कार्यो के लिये राशि उपलब्ध कराये है जिससे सभी वार्डो में विकास कार्य कराये जा रहे है, इसी कडी में आज वार्ड नं. 45 के 150 क्वाटर अटल आवास के पास एवं जीवन कालोनी में सामुदायिक भवन निर्माण कराने भूमिपूजन किया जा रहा है। सामुदायिक भवन बन जाने से क्षेत्रवासियों को विभिन्न आयोजनों के लिये एक अच्छा स्थान मिल जायेगा। उक्त कार्य अतिशीघ्र प्रारंभ कराया जायेगा, साथ ही वार्डवासियों की अन्य मांगो का प्राथमिकता के आधार पर निराकरण किया जाएगा। महापौर श्री यादव ने कहा कि आज आंगनबाडी में गर्भवती महिलाओ को सुपोषण कीट का वितरण कर नवजात शिशुओ का अन्न प्राशन कराया गया। यह कार्य शासन पहल से महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा आंगनबाडीयों मे किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री माननीय विष्णु देव साय हर वर्ग के लोगो का ध्यान रख उन्हें छोटी से छोटी योजना का लाभ दे रहे है। उनका उद्देश्य प्रदेश के हर वर्ग के लोगों को शासन की योजना का लाभ देना है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में जीवन कालोनी में प्रमोद साहू, हर्ष लता देशमुख, प्रियंका तिवारी, निशा बघेल, अकिता श्रीवास, सुनीता खडगे, अर्चना देशमुख, एस.के. सिंह, अरूण राव जीवन चतुवेदी, खेम साहू, धालेश वैष्णव ने एवं अटल आवास 150 क्वाटर में कांति मौर्य, दुर्गा सिन्हा, लक्ष्मी गोस्वामी, माया मेश्रा, राजू गुप्ता, नरेश, विक्की, आदि ने अतिथियो का पुष्प गुच्छ से स्वागत किया। इस अवसर पर उप अभियंता श्री अनुप पाण्डे सहित वार्डवासी उपस्थित थे।

संस्कार एक ऐसी विद्या जो जीवन में कभी समाप्त नहीं होती : डॉ. शालनी जैन

श्रमण संस्कृति संस्कार शिविर के समापन पर टापर्स सहित अन्य को सम्मानित किया गया

बच्चों ने बहुत ही मेहनत और अनुशासन से श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया- विजय धुर्रा

अशोकनगर (विश्व परिवार)। मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज के आशीर्वाद से श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर जयपुर द्वारा श्री दिगम्बर जैन पंचायत कमेटी के तत्वावधान में आयोजित श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर का समापन गंज मन्दिर में डा शालनी वनीत कुमार जैन एस पी अशोक नगर के मुख्य आतिथ्य में रखा गया जिसमें सभी मन्दिरों की पाठशालाओ मे अध्ययनरत शिविरार्थियों में श्रेष्ठ शिविरार्थियों को पुरूस्कार प्रदान किये गए शिविर में सर्व श्रेष्ठ स्थान नीलेश भइया ने प्राप्त किया इसके साथ ही सभी कक्षाओं के प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले शिविरार्थियों को पुरस्कृत अतिथियों द्वारा प्रदान किये गये।

पुरस्कार वितरण समारोह को सम्बोधित करते हुए जैन समाज के मंत्री विजय धुर्रा ने कहा कि सांगानेर जयपुर से पधारे विद्वान श्री अनुभव शास्त्री विव्दतश्री शिवम् शास्त्री विदत श्री संयम शास्त्री पंडित पीयूष शास्त्री विव्दतश्री कमलेश शास्त्री ने बहुत मेहनत की सभी समाज जन उनके कठोर परिश्रम की बहुत प्रसन्सा कर रहे हैं करें भी क्यों नहीं एक दिन में तीन तीन शिविरार्थियों को इन्होंने ज्ञान आराधना कराई है और सभी के हृदय में आदर का स्थान वनाया है यही तो विशेष बात होती है जो लोगों को याद रहती है शिविर से वच्चो ने ज्ञान अर्जित करने के साथ ही जो संस्कार प्राप्त किये है वे संस्कार जीवन भर काम आयेगे इसके पहले मुख्य अतिथि डा शालनी वनीत कुमार जैन एस पी का जैन समाज अध्यक्ष राकेश कासंल उपाध्यक्ष अजित वरोदिया प्रदीप तारई मंत्री विजय धुर्रा शिविर प्रभारी निर्मल मिर्ची राजू पिपरई हेमंत टडैया दारा पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया। दीप प्रज्जवलन कर किया समारोह का शुभारंभ समारोह के प्रारंभ में मुख्य अतिथि श्री मति शालनी विनीत कुमार जैन एस पी अशोक नगर समाज अध्यक्ष राकेश कासंल उपाध्यक्ष अजित वरोदिया प्रदीप तारई महामंत्री राकेश अमरोद मंत्री विजय धुर्रा ने आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन किया।

मुख्य अतिथि डा शालनी वनीत कुमार जैन एस पी अशोक नगर ने कहा कि संस्कार एक ऐसी विद्या है जो जीवन में कभी भी समाप्त नहीं होती आज उसे जितना मांजेंगे वह उतनी ही चमकदार बनती चली जाएगी निर्यातक श्रमण मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज ने श्रमण संस्कृति संस्थान के माध्यम से ऐसा माध्यम दिया है जो स्वाध्याय से दूर हो रहे समाज को एक बार फिर से मन्दिर व वच्चो को पाठशाला की ओर खींच कर लाई रहा है मैं यही की पंचायत कमेटी को धन्यवाद करुंगी वे भी बढ़े उत्साह से सभी कार्यो सम्पन्न करने में बहुत रुचि लेते हैं।

एनआईटी रायपुर में नवनिर्मित स्मार्ट क्लासरूम और डाटा साइंस एंड एनालिटिक्स लैब का हुआ उद्घाटन, विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक सुविधाओं में हुई बढ़ोतरी

रायपुर (विश्व परिवार)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) रायपुर में 12 जून 2025 को एक विशेष आयोजन के तहत तीन अत्याधुनिक स्मार्ट क्लासरूम (स्न-40, F-38, F-13) और एक नवनिर्मित डाटा साइंस एंड एनालिटिक्स लैब प्रयोगशाला का उद्घाटन किया गया। यह आयोजन संस्थान में पढ़ाई की सुविधाओं को बेहतर बनाने की दिशा में एक अहम कदम रहा। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में एनआईटी रायपुर एवं आईआईटी भिलाई के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के माननीय अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे उपस्थित रहे, जिनके करकमलों से इन आधुनिक क्लासरूम का उद्घाटन किया गया। इस दौरान उनके साथ एनआईटी रायपुर के निदेशक डॉ. एन. वी. रमना राव, और एलुमनी एसोसिएशन ऑफ जीईसीएनआईटी के अध्यक्ष तथा पॉलीबॉन्ड इन्सुलेशन प्राइवेट लिमिटेड के चेयरमैन श्री उमेश चितलांगिया, छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत विनियामक आयोग के अध्यक्ष श्री हेमंत वर्मा,एनआईटी रायपुर के रजिस्ट्रार डॉ. एन. डी. लोंढे, सभी डीन, विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, फैकल्टी मेम्बर्स, प्रतिष्ठित एलुमनी सदस्य और छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

एनआईटी रायपुर की स्मार्ट क्लासरूम योजना , एक अद्भुत पहल है जिसके तहत संस्थान के क्लासरूम को औद्योगिक जगत के प्रसिद्ध व्यक्तियों और अलुमिनी के सहयोग से आधुनिक सुविधाओं से लेस किया जा रहा है। इस पहल के तहत प्रसिद्ध व्यक्तियों द्वारा संस्थान के क्लासरूम को आधुनिक बनानें हेतु आर्थिक व अनुभवी सहयोग प्रदान किया जा रहा है। इस योजना के तहत पहले चरण में आज तीन स्मार्ट क्लासरूम का उदघाटन किया गया , साथ ही डिपार्टमेंट ऑफ कंप्यूटर एप्लीकेशन की एक नयी डाटा साइंस एंड एनालिटिक्स लैब का भी उदघाटन किया गया।

संस्थान के पहले स्मार्ट क्लास रूम द्व- 40 (कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग) का उदघाटन , एनआईटी रायपुर एवं आईआईटी भिलाई के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के माननीय अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे , दुसरे स्मार्ट क्लास रूम द्व ङ्क 38(मेकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग) का उद्घाटन एलुमनी एसोसिएशन ऑफ जीईसीएनआईटी के अध्यक्ष तथा पॉलीबॉन्ड इन्सुलेशन प्राइवेट लिमिटेड के चेयरमैन श्री उमेश चितलांगिया द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त स्मार्ट क्लासरूम द्व-13 (माइनिंग इंजीनियरिंग विभाग) और डिपार्टमेंट ऑफ कंप्यूटर एप्लीकेशन की एक नयी डाटा साइंस एंड एनालिटिक्स लैब का उद्घाटन भी डॉ सुरेश हावरे द्वारा किया गया। इस अद्भुत पहल से संस्थान के अन्य अलुमिनी सदस्य जुड़ रहे है और भविष्य में संस्थान के अन्य क्लासरूम को भी स्मार्ट बनाने की योजना बनाई जा रही है।

संक्षिप्त समाचार

उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा और वन मंत्री का एयरपोर्ट में किया गया आत्मीय स्वागत

जगदलपुर (विश्व परिवार)। स्थानीय मां दंतेश्वरी एयरपोर्ट में उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा और वन मंत्री श्री केदार कश्यप अपने एक दिवसीय संक्षिप्त बस्तर प्रवास में जगदलपुर आगमन पर जनप्रतिनिधियों और वरिष्ठ अधिकारियों ने आत्मीय स्वागत किया। इस दौरान पूर्व मंत्री श्री महेश गागड़ा, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग सचिव श्री भीम सिंह भी पहुंचे, अतिथियों का स्वागत के दौरान विधायक चित्रकोट श्रीविनायक गोयल भी साथ रहे, बस्तर आईजी श्री सुंदरराज पी.,कलेक्टर श्री हरिस एस, एसपी श्री शलभ कुमार सिन्हा, जिला पंचायत सीईओ श्री प्रतीक जैन सहित अन्य अधिकारियों द्वारा किया गया।

पारिवारिक विवाद पर भाई ने कर दी भाई की हत्या

दुर्ग। जिले के थाना छावनी अन्तर्गत दलबीर भवन के सामने नंदनी रोड सुभाष नगर भिलाई में हुए हत्या के मामले का पुलिस ने खुलासा किया है। मामले में पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी ने जमीन को लेकर चल रहे विवाद के चलते मृतक के सिर में टंगिया मारकर उसकी हत्या की थी। बता दें कि दिनांक 10/06/2025 को रात्रि करीबन 8.30 बजे राज उर्फराजेश सिंह एवं महेन्द्र कुमार सिंह दोनो सगे भाई है के बीच पारिवारिक जमीन व बात को लेकर अक्सर विवाद होता रहत था। घटना के दिन भी दोनो के बीच विवाद हुआ और आरोपी राज उर्फराजेश सिंह ने अपने हाथ मे टंगिया से महेन्द्र कुमार सिंह के सिर एवं अन्य जगह पर टंगिया मार कर हत्या कर दिया।

विकसित भारत के लिये समर्पित मोदी सरकार - उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा

11 वर्षों में मोदी सरकार ने सेवा को संकल्प बनाया, सुशासन को संस्कृति व सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता माना - उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा

नरेंद्र मोदी राजपथ पर नहीं कर्तव्य पथ चलने वाले प्रधामंत्री - उपमुख्यमंत्री शर्मा

जगदलपुर (विश्व परिवार)। उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि केन्द्र की मोदी सरकार ने सफलतम 11 वर्ष पूर्ण किये हैं।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने विकसित भारत के अमृत काल में सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण के विकास की नई यात्रा तय की है। मोदी सरकार की हर योजना के केन्द्र में जनकल्याण और आम नागरिक के जीवन को आसान करने के साथ- साथ देश को वैश्विक स्तर पर नए आयाम देने की भावना रही है। नरेंद्र मोदी राजपथ पर नहीं बल्कि कर्तव्य पथ पर चलने वाले प्रधानमंत्री है।

एक दिवसीय बस्तर प्रवास पर आये प्रदेश के उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने गुरुवार को भाजपा जिला कार्यालय में पत्र वार्ता को संबोधित करते हुये कहा कि बीते 11 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में सरकार ने भारत की सीमायें सुरक्षित की, अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं से लगने वाले राज्यों के सीमावर्ती क्षेत्रों में रोड कनेक्टिविटी को बेहतर बनाया गया। जिससे भारतीय सीमाओं की सुरक्षा और भी मजबूत हुई है।

उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि 2014 से पहले भारत अधिकांश रक्षा उपकरण यहां तक की बंदूकों की गोलियों को भी विदेश से आयात करता था।प्रधानमंत्री मोदी की केन्द्र सरकार के मेक इन इंडिया के तहत शासकीय और प्राइवेट कंपनियों ने मिलकर भारत के रक्षा क्षेत्र को बेहतर बना दिया है और विदेशी आयात पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगा दिया है। उन्होंने कहा कि एस-400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम, 'ब्रह्मोस, आकाश मिसाइल, आइएनएस विक्रांत, तेजस और, प्रचंड' अटैक हेलीकॉप्टर जैसे स्वदेशी तकनीकों के साथ अब भारत न केवल आत्मनिर्भर रक्षा शक्ति के रूप में उभर रहा है बल्कि आज रक्षा उपकरणों का निर्यात भी कर रहा है। आज भारत का रक्षा निर्यात 34 गुना बढ़कर 23,622 करोड़ तक पहुंच गया है। फिलीपींस जैसे देश भारत से ब्रह्मोस मिसाइल खरीद रहे हैं। यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की रणनीतिक दूरदर्शिता और कूटनीतिक तैयारी का नतीजा हैं।

उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत हुई है। प्रधानमंत्री मोदी ने टेक्नोलॉजी को जन-जन तक पहुंचाया। भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के जरिए पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों और एयरबेस को ध्वस्त कर यह दिखा दिया कि अब मोदी का यह नया भारत शांति की बातें नहीं बल्कि घर में घुसकर आतंक का सफाया करता है। प्रधानमंत्री मोदी ने पाकिस्तान को स्पष्ट और सख्त संदेश भी दिया कि आतंक, पानी और व्यापार एक साथ नहीं चल सकते, खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते। पूरे विश्व को प्रधानमंत्री मोदी ने स्पष्ट कर दिया कि भारतीय धरती पर किसी भी हमले को युद्ध की कार्रवाई माना जाएगा। कट काल के दौरान मोदी सरकार ने अपने नागरिकों को विश्वभर के हर कोने से सुरक्षित निकालकर यह सिद्ध किया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार केवल सीमाओं के भीतर नहीं, विश्वभर में भारतीयों की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कहा कि विगत 11 वर्षों में केंद्र सरकार ने माओवादी आतंकवाद पर सख्त प्रहार किया है।आंतरिक सुरक्षा की सबसे बड़ी चुनौती माओवादी आतंक के खात्मे का मोदी जी और अमित शाह जी का संकल्प भी सिद्ध हो रहा है। छत्तीसगढ़ में बीते डेढ़ साल में 425 माओवादियों को न्यूट्रलाइज किया गया है। 1388 माओवादी आत्मसमर्पण कर चुके हैं और 1443 को गिरफ्तार किया गया है। नक्सल विरोधी अभियान में हमारे जवानों ने बसवराजू और सुधाकर जैसे बड़े नक्सलियों को न्यूट्रलाइज कर माओवाद की रीढ़ तोड़ दी है।

उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि मोदी सरकार ने नई औद्योगिक नीति लागू की है। जिसकी वजह से भारत में विदेशी कंपनियों ने बड़े-बड़े संयंत्र की स्थापना की है। प्रधानमंत्री मोदी जी की सरकार ने Ease of Doing Business बिजनेस को जमीन पर उतारते हुए भारत को 142 वीं रैंक से 63 वीं रैंक तक पहुंचाया है। व्यापार को आसान बनाने वाली नीतियों के परिणामस्वरूप 2023-24 में 1.80 लाख से अधिक नई कंपनियां भारत में रजिस्टर हुई, श्वद्वद्दह्वद्दठ्ठ४ ष्टह्वद्गस्त्रद्बह्ल ख्रुठ्ठद्द गारंटी योजना के तहत स्र्स्स्ब्न को ऋ्रण उपलब्ध कर ?2.39 लाख करोड़ का ह्रक्ष होने से बचाया और इसके अलावा भारत ने 2024-25 में ?825 अरब डॉलर से अधिक का वस्तु और सेवा निर्यात कर आर्थिक मोर्चे पर भी विश्व में नए आयाम स्थापित किए।

उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि राजनीति से इतर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्र प्रगति की नयी कहानी लिखी है।चाहे श्री राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण, अनुच्छेद 370 को निष्प्रभावी किया जाना, विश्वनाथ और महाकाल कॉरिडोर आदि दर्जनों उपलब्धियों का वर्णन इतिहास करेगा।

पत्र वार्ता में कैबिनेट मंत्री केदार कश्यप, पूर्व सांसद दिनेश कश्यप, पूर्व वन मंत्री महेश गागड़ा, भाजपा जिला अध्यक्ष वेदप्रकाश पाण्डेय, विधायक चित्रकोट विनायक गोयल, जिपं अध्यक्ष वेदवती कश्यप,पूर्व विधायक संतोष बाफना, बैदूराम कश्यप, पूर्व जिलाध्यक्ष रूपसिंह मण्डावी, निगम अध्यक्ष खेम सिंह देवांगन, जिला उपाध्यक्ष योगेन्द्र पाण्डेय, रजनीश पाणिग्रही, आलोक अवस्थी, नगर अध्यक्ष प्रकाश झा उपस्थित रहे।

प्रीमियम शराब दुकान को लेकर बढ़ा राजनीतिक घमासान, महापौर के बयान पर नेता प्रतिपक्ष राजेश चौधरी ने किया पलटवार

जगदलपुर (विश्व परिवार)। नगर निगम क्षेत्र में प्रस्तावित प्रीमियम शराब दुकान को लेकर सियासत तेज हो गई है। महापौर संजय पांडे द्वारा हाल ही में दिए गए बयान पर अब विपक्ष ने तीखा हमला बोला है। कांग्रेस नेताओं ने महापौर पर जनता को भ्रमित करने और तथ्यों से भटकाने का आरोप लगाया है। निगम में नेता प्रतिपक्ष राजेश चौधरी ने प्रेसनोट जारी कर महापौर संजय पांडे के खिलाफ मोर्चा खोला है राजेश चौधरी ने कहाँ है महापौर संजय पांडे ने शपथ ग्रहण से लेकर आज आज तक इस शहर को झूठ के सिवाय कुछ नहीं दिया है अगर यह मामला कांग्रेस द्वारा उपजाया हुआ अफवाह था तो लगभग 8 से 10 दिन पूर्व क्या महापौर जी इस विषय पर बोलने के लिए किसी प्रकार की कोई मजबूरी से बंधे हुए थे अगर ऐसा था तो तुरंत उन्हें अपना बयान जारी करना था जबकि सच्चाई यह है कि नगर निगम के स्पीकर खेम सिंह देवांगन स्वयं जाकर वहां के व्यापारियों से हस्ताक्षर करवाए हैं जिसकी पुष्टि मैं स्वयं जाकर वहां के व्यापारियों से पूछ कर उसके बाद प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से और ज्ञापन के माध्यम से कलेक्टर /आयुक्त महोदय को अवगत कराया एवं वहां पूर्व में भी प्रीमियम शराब दुकान की खोलने हेतु कांग्रेस सरकार में लाया गया था जिसका विरोध भाजपा ने पूरे दल के साथ बाद में किया उससे पहले हमारे सरकार के इस दुकान खोलने के मामले को लेकर कांग्रेस के ही पूर्व विधायक विवेक रेखचंद जैन जी ने माननीय पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल से फोन में बात करके जन भावनाओं के अनुरूप वहां दुकान खोलने का विरोध किया था जहां जन भावनाओं को ठेस पहुंचेगी वहां कांग्रेस किसी भी प्रकार का कोई जबरिया करवाई नहीं करेगा । जब रेखचंद जैन जी ने इस दुकान का विरोध किया और उसे तत्काल रुकवाने की बात कही उसके दूसरे दिन भारतीय जनता पार्टी के लोगों का नींद खुला था और खासकर महापौर जी का क्योंकि वह मामला नगर निगम के सामान्य सभा से पारित होकर आया था और उस दौरान नेता प्रतिपक्ष के रूप में संजय पांडे जी ही वहां मौजूद रहे भले ही आज संजय पांडे जी झूठ का सहारा ले पर वास्तविक सच्चाई यही है जिस दिन स्पीकर महोदय वहां व्यापारियों से हस्ताक्षर करने गए थे उसी दिन रात रात में मुझे एक दो व्यापारियों ने फोन करके यह बोला की भैया हमें मालूम नहीं था और हमने हस्ताक्षर कर दिया है क्या आप इसका विरोध करेंगे मैने कहा हां हम विरोध कर रहे हैं तो उन्होंने कहा हम लोग भी एक पत्र कलेक्टर महोदय को इसके विरोध में देंगे इसकी पुष्टि आप स्वयं जाकर वहां के व्यापारियों से कर सकते हैं और आप जब आप जाएं तो जरूरी हो तो मुझे भी बुलाएं ताकि सच्चाई शहर की जनता को पता चल सके । हमारे विरोध के बाद जब शहरवासी गणमान्य नागरिक गण व्यापारी संगठनो ने भी विरोध किया तब महापौर जी को खुद को साफसुथरा साबित करने के लिए यह बयान जारी करना पड़ा । जिन्होंने भी प्रीमियम शराब दुकान का विरोध किया है वह सब स्वयं जानते हैं की आबकारी विभाग के कर्मचारी एवं निगम स्पीकर ने जाकर हस्ताक्षर करवाया है भले ही अब कुछ भी बातें बोलकर बचना चाहते हो परंतु शहर की जनता सब जान रही है और आपके माध्यम से मैं महापौर जी को बताना चाहता हूं की शहर की जनता ने उन्हें जन भावनाओं के अनुरूप कार्य करने के लिए चुना है ना कि कांग्रेस पार्टी को कोष कोषकर झूठ बोलकर जनता के कामों से बचने के लिए चुना है ।

शासकीय कार्य में बाधा व वन अधिकारी पर जानलेवा हमला करने वाले पांच आरोपी गिरफ्तार

गरियाबंद (विश्व परिवार)। शासकीय कार्य में बाधा डालते हुए वन विभाग के अधिकारी पर जानलेवा हमला करने वाले पाँच आरोपियों को गरियाबंद पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए गिरफ्तार कर लिया है। यह मामला थाना गरियाबंद अंतर्गत ग्राम हरदी का है, जहाँ वन भूमि पर अवैध कब्जे को लेकर यह गंभीर घटना घटी। वन परिक्षेत्र परसुली के सहायक परिक्षेत्र अधिकारी हरिअर्जुन यादव द्वारा थाना गरियाबंद में प्रस्तुत आवेदन के अनुसार, ग्राम हरदी निवासी आशाराम गोंड द्वारा वन कक्ष क्रमांक 360 में जेसीबी मशीन की सहायता से वन अधिकार भूमि पर अवैध कब्जा किया जा रहा था। जब वन अधिकारी और उनकी टीम ने इस कार्य को रोकने का प्रयास किया, तब आरोपियों ने एक राय होकर गाली-गलौच करते हुए डंडे, कुल्हाड़ी और हाथों से हमला कर दिया, जिससे अधिकारी को गंभीर चोटें आईं। घटना की रिपोर्ट के आधार पर थाना गरियाबंद में आरोपियों के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धाराएँ 296, 351(2), 115(2), 191(2), 121(2), 132, 126(2), 109(1) के अंतर्गत अपराध दर्ज किया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए वरिष्ठ अधिकारियों ने त्वरित गिरफ्तारी के निर्देश दिए, जिसके बाद थाना प्रभारी निरीक्षक ओम प्रकाश यादव के नेतृत्व में एक विशेष टीम गठित कर त्वरित कार्रवाई की गई। टीम ने मौके पर पहुँच कर सभी आरोपियों को हिरासत में लिया और विस्तृत पूछताछ की। पूछताछ में सभी आरोपियों ने अपना अपराध स्वीकार किया, जिसके बाद उन्हें विधिवत गिरफ्तार कर न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। इस संपूर्ण कार्रवाई में थाना प्रभारी और उनकी टीम की विशेष भूमिका रही, जिन्होंने तत्परता से कार्य करते हुए गंभीर अपराध के आरोपियों को गिरफ़्तार कर कानून व्यवस्था बनाए रखने में अहम योगदान दिया।

गिरफ्तार आरोपी इस प्रकार हैं:

1. आशाराम ध्रुव पिता रैन सिंह ध्रुव, उम्र 55 वर्ष
2. झमेश्वर ध्रुव पिता आशाराम ध्रुव, उम्र 29 वर्ष
3. धनेश्वर ध्रुव पिता आशाराम ध्रुव, उम्र 20 वर्ष
4. रोहित ध्रुव पिता देवी सिंह ध्रुव, उम्र 35 वर्ष
5. सीताबाई पति भारत सिंह ध्रुव, उम्र 25 वर्ष

ट्राईफेड की फूडपार्क के संचालन के लिए उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा और वन मंत्री श्री केदार कश्यप ने की बैठक

फूड पार्क के भवन और स्थापित मशीनों का भी किया अवलोकन

जगदलपुर (विश्व परिवार)।ट्राइफूड परियोजना भारत सरकार के जनजातीय मामलों के मंत्रालय के ट्राइफेड द्वारा खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के सहयोग से जिला प्रशासन की सहायता से क्रियान्वित किया जाना है। ट्राइफूड का उद्देश्य आदिवासी वन संग्रहकर्ताओं द्वारा एकत्र किए गए लघु वनोपजों के बेहतर उपयोग और मूल्य संवर्धन के माध्यम से आदिवासियों की आय में वृद्धि करना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रदेश के उप मुख्यमंत्री, गृहमंत्री और बस्तर जिले के प्रभारी मंत्री श्री विजय शर्मा और वन मंत्री श्री केदार कश्यप ने जगदलपुर शहर के नजदीक सेमरा स्थित ट्राइफेड के ट्राईफुड पार्क के सभाकक्ष में बैठक लेकर ट्राईफुड पार्क के संचालन के लिए विस्तृत चर्चा की। ज्ञात हो कि ट्रायफेड द्वारा 8.20 करोड़ की लागत से सेमरा जगदलपुर में ट्राईफूड पार्क तैयार कर लिया गया है इसका सकल क्षेत्रफल लगभग 21.55 एकड़ है, जिसमें 4.36 एकड़ में प्लाट स्थापित है।

उल्लेखनीय है कि जगदलपुर बस्तर में ट्रायफेड द्वारा स्थापित यह फूड पार्क वनोत्पाद और स्थानीय उत्पादों की एक प्रमुख प्रसंस्करण इकाई है, जिसमें वनधन केन्द्रों एवं स्थानीय जनजाति कृषकों से कच्ची सामग्री (विशेषकर लघु वनोपज) न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर लेकर उसका प्रसंस्करण कर उत्पादन, पैकेजिंग एवं ब्रांडिंग किया जाएगा। बैठक में इस फूड पार्क के व्यवस्थित संचालन एवं आगामी कार्ययोजना पर चर्चा की गई। ट्राइफेड के अधिकारी ने बैठक में बताया कि इस फूड पार्क में शहद प्रोसेसिंग,काजू प्रोसेसिंग, इमली प्रोसेसिंग, मौसमी फल और मसालों की प्रोसेसिंग करने की योजना है साथ ही कोल्ड स्टोरेज की भी सुविधा रखी गई है।

गृहमंत्री श्री शर्मा ने कहा कि बस्तर के मूल निवासियों का सहकारी समिति बनाकर फूड पार्क के लिए रॉ मटेरियल सप्लाई की व्यवस्था करें। फूड पार्क में इमली, महुआ, आम, काजू, साल-बीज जैसे स्थानीय उत्पाद को प्रोसेसिंग में प्राथमिकता दें। बैठक में संस्थान के संचालन करने वाले का चयन करने के लिए कमेटी बनाने पर चर्चा किया गया और उपस्थिति जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों ने संचालन के लिए अलग-अलग सुझायें मॉडल पर भी चर्चा किए।

वन मंत्री ने कहा कि युनिट को संचालन के लिए प्रोफेशनल टीम की आवश्यकता होगी। उन्होंने अन्य राज्यों में ट्राइफेड द्वारा संचालित या अन्य संस्था के माध्यम से स्थानीय उत्पादों का प्रसंस्करण की जानकारी लेकर विस्तृत कार्य योजना बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने इस प्रकार के फिल्ड में काम करने वालों को प्राथमिकता देंने की बात कही। बैठक में चित्रकोट विधायक श्री विनायक गोयल, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती वेदवती कश्यप, पूर्व मंत्री श्री महेश गागड़ा, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के सचिव श्री भीम सिंह, ट्राईफेड के पूर्व एमडी श्री प्रवीण कृष्णा, बस्तर आईजी श्री सुंदरराज पी., कलेक्टर श्री हरिस एस, एसपी श्री शलभ कुमार सिन्हा सहित ट्राईफेड के डिप्टी जनरल श्रीमती ममता शर्मा, क्षेत्रीय प्रबंधक प्रभाकर खदाने सहित अन्य अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

बैठक के पश्चात प्रभारी मंत्री श्री शर्मा और वन मंत्री श्री कश्यप ने प्रोसेसिंग यूनिट में स्थापित मशीनों का अवलोकन किया। साथ ही संस्थान का जल्द से जल्द प्रारम्भ करने की बात कही। मशीनों में स्थानीय उत्पाद के प्रोसेसिंग के लिए आवश्यक उपकरण को परिवर्तित कर काम को गति देने की जरूरत बताई।

www.dainikvishwaparivar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक विश्व परिवार

व्यापार समाचार

भारतीय फुटबॉल टीम का खराब प्रदर्शन, 153वीं रैंक वाले हांगकांग से 0-1 से हारी

कोवलून (हांगकांग)। भारतीय फुटबॉल टीम का 2027 एएफसी एशियाई कप क्वालीफायर में खराब प्रदर्शन जारी है. भारत को यहां मंगलवार, 10 जून को अहम मैच में स्टीफन परेरा के इंजरी टाइम में दागे गोल के कारण मेजबान हांगकांग के खिलाफ 0-1 से हार का सामना करना पड़ा. अपने से कम रैंकिंग वाले हांगकांग (153वीं रैंक) के खिलाफ मिली यह हार भारत के लिए बड़ा झटका है. काई टैक स्टेडियम में खेला गया यह मुकाबला हाफटाइम तक गोलरहित रहा, हालांकि भारत ने 35वें मिनट में एक आसान गोल गंवा दिया, जब आशिक कुरुनियान नजदीकी रेंज से गोल करने में नाकाम रहे. हालांकि, भारत ने हांगकांग को भी पहले हाफ में गोल-लाइन क्लीयरेंस से वंचित रखा. दूसरे हाफ में दोनों टीमों ने गोल करने के पूरा जोर लगाया. भारत के प्रयास तेज हो गए, जिसमें रिप्लेसमेंट सुनील छेत्री अंतिम मिनटों में गोल करने के करीब पहुंच गए. हालांकि, निर्णायक क्षण मैच के अंत में आया, जब भारतीय गोलकीपर विशाल कैथ क्लीयरेंस में चूक गए. इसके बाद, स्टीफन पेरेरा ने 90वें मिनट में मिले पेनल्टी को गोलपोस्ट में डाल दिया, जिससे होम टीम की जीत सुनिश्चित हो गई. उन्होंने गेंद को कैथ के दाईं ओर से गोल में पहुंचाया. वहीं, कैथ को इंजरी टाइम के फाउल के लिए पीला कार्ड दिखाया गया. इस हार से भारत की सऊदी अरब में होने वाले अगले एशियाई कप में पहुंचने की संभावनाओं को नुकसान पहुंचा है. टीम अब फीफा रैंकिंग में 133वें स्थान पर खिसक जाएगी जबकि हांगकांग को अंक मिलेंगे और वह आगे बढ़ेगा. हांगकांग से मिली यह हार भारत के लिए एक बड़ा झटका है, क्योंकि उसने मार्च में होम ग्राउंड पर खेले गए अपने पहले एशियाई कप क्वालीफाइंग 2027 मैच में बांग्लादेश के खिलाफ गोल रहित ड्रॉ खेला था. इसके साथ ही कोच मनोलो का नेशनल टीम के साथ भविष्य भी अनिश्चित माना जा रहा है. मनोलो ने आईएसएल की टीम एफसी गोवा के कोच के रूप में अपना पद बरकरार रखा है.

ब्राजील ने फीफा वर्ल्ड कप 2026 के लिए किया क्वालीफाई, पैराग्वे को कड़े मुकाबले में 1-0 से हराया

नई दिल्ली। ब्राजील ने मंगलवार को घरेलू मैदान पर पैराग्वे पर 1-0 की मामूली जीत के साथ 2026 फीफा विश्व कप में जगह पक्की कर ली. यह कार्लो एंसेलोटी की कोचिंग में टीम की पहली जीत भी थी. 44वें मिनट में विनीसियस जूनियर के गोल ने ब्राजील को टूर्नामेंट में जगह दिलाई, जिसकी मेजबानी कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका और मैक्सिको करेंगे. 5 बार के चैंपियन ने मैच में बढ़त बनाई, जब रियल मैड्रिड के स्टार विनीसियस जूनियर ने मैथियस कुन्हा से क्रॉस मिलने के बाद करीब से गोल किया, जिन्हें हाल ही में मैनचेस्टर यूनाइटेड ने साइन किया था. ब्राजील और पैराग्वे के बीच का मैच तब बहुत महत्वपूर्ण हो गया, जब उरुग्वे ने मोंटेवीडियो में वेनेजुएला को 2-0 से हराया. इस रिजल्ट का मतलब था कि पैराग्वे को क्वालीफाई करने के लिए केवल एक अंक की आवश्यकता थी, जबकि ब्राजील को प्रतियोगिता में आगे बढ़ने के लिए जीत की आवश्यकता थी. ब्राजील की टीम ने पहले हाफ में गोल करने के अवसर बनाने के लिए संघर्ष किया. 35वें मिनट में कुन्हा ने एक आसान मौका गंवा दिया क्योंकि वह एक करीबी रेंज से हेडर से दूर चला गया. हालांकि, बाद में उन्होंने विजयी गोल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. उन्होंने बॉक्स में प्रवेश करने के लिए राफिन्हा के बिल्ड-अप प्ले का फायदा उठाया और विनीसियस को एक लो क्रॉस दिया, जिस पर उन्होंने झपट्टा मारा और गोल किया. इस जीत के साथ, ब्राजील 16 मैचों में 25 अंकों के साथ दक्षिण अमेरिकी स्टैंडिंग में तीसरे स्थान पर है. अब, वे शीर्ष छह में जगह बनाने और विश्व कप के लिए स्वतः योग्यता सुनिश्चित कर चुके हैं. वहीं, हार के बाद पैराग्वे के 24 अंक हैं. उन्हें अब 2010 के बाद से अपने पहले विश्व कप में भाग लेने के लिए केवल एक अंक की जरूरत है.

दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ रहा भारतीय बाजार

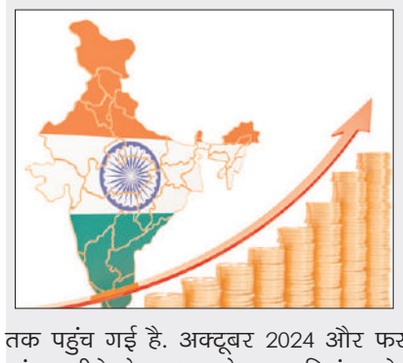

नई दिल्ली। भारत की लिस्टेड कंपनियों ने मार्च 2025 की शुरुआत से अब तक बाजार पूंजीकरण में लगभग 1 ट्रिलियन डॉलर की बढ़ोतरी की है, जो 5.33 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच गई है. अक्टूबर 2024 और फरवरी 2025 के बीच पांच महीने के सुधार के बाद निरंतर तेजी को दिखाता है. प्रतिशत के लिहाज से, बाजार पूंजीकरण में 21 फीसदी से अधिक की बढ़ोतरी हुई है - जो दुनिया के टॉप 10 इक्विटी बाजारों में सबसे अधिक बढ़ोतरी है. भारत वर्तमान में अमेरिका, चीन, जापान और हांगकांग के बाद वैश्विक स्तर पर पांचवां सबसे बड़ा बाजार है. वैश्विक स्तर पर भारत के बाद जर्मनी ने दूसरा सबसे बड़ा लाभ दर्ज किया, जिसका एमकैप इस अवधि के दौरान लगभग 14 फीसदी बढ़ा है. कनाडा में लगभग 11 फीसदी की बढ़ोतरी हुई, जबकि हांगकांग में 9 फीसदी से अधिक की बढ़ोतरी देखी गई. जापान और यूनाइटेड किंगडम में लगभग 8 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई. इस अवधि के दौरान भारत के बेंचमार्क सूचकांक, सेंसेक्स और निफ्टी में 12.5 फीसदी और 13.5 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है, जबकि व्यापक बीएसई मिडकैप और स्मॉलकैप सूचकांक क्रमश- 20.7 फीसदी और 26 फीसदी से अधिक चढ़े हैं. हालांकि इस मजबूत रैली ने मूल्यांकन को एक बार फिर से ऊंचे स्तर पर पहुंचा दिया है. संयुक्त राज्य अमेरिका, जो दुनिया का सबसे बड़ा इक्विटी बाजार है, ने लगभग 2.4 फीसदी की मामूली बढ़ोतरी दर्ज की, जबकि दूसरे सबसे बड़े चीन में 2.7 फीसदी की बढ़ोतरी देखी गई. फ्रांस और ताइवान ने क्रमश- 3.9 फीसदी और 3.2 फीसदी से अधिक की बढ़ोतरी दर्ज की.

रेनालिक्स ने दुनिया की पहली स्वदेशी एआई आधारित स्मार्ट हीमोडायलिसिस मशीन उतारा

किडनी केयर को बनाया सस्ता और सुलभ

किडनी (रेनल) केयर सेक्टर की देश की अग्रणी प्रौद्योगिकीय नवाचार (टेक्नोलॉजी इनोवेशन) कंपनी रेनालिक्स हेल्थ सिस्टम्स प्राइवेट लिमिटेड ने दुनिया की पहली पूरी तरह से स्वदेशी, एआई आधारित और क्लाउड सक्षम हीमोडायलिसिस मशीन रेनालिक्स - आरएक्सटी 21 लॉन्च की है। इस मशीन के जरिए कहीं से रियल टाइम मॉनिटरिंग हो सकती है। इसके साथ ही यह क्लीनिकल कनेक्टिविटी जैसी सुविधाओं से भी लैस है। 6.70 लाख रुपये की शुरुआती कीमत के साथ आयातित मशीनों की तुलना में काफी कम मूल्य पर उपलब्ध रेनालिक्स - आरएक्सटी 21 डायलिसिस सुविधा को बड़ी आबादी के लिए किफायती और सुलभ बनाने के साथ-साथ शहरी, अर्ध-शहरी (सेमी-अर्बन) और ग्रामीण इलाकों में मांग और आपूर्ति के बीच के अंतर को पाट देगी।

पूरी तरह से भारत में डिजाइन की गई और विनिर्मित रेनालिक्स - आरएक्सटी 21 किडनी के मरीजों, एंड-स्टेज रेनल डिजीज (ईएसआरडी) मरीजों और खासकर दिल (हार्ट), फेफड़ों और किडनी में गंभीर चोट से जुड़ी जटिलताओं वाले मरीजों को सुरक्षा और गुणवत्तापूर्ण देखभाल (क्वालिटी केयर) उपलब्ध कराने के लिए क्लाउड-आधारित टेलीनेफ्रोलॉजी प्लेटफॉर्म सहित अन्य नवीनतम प्रौद्योगिकी (लेटेस्ट टेक्नोलॉजीज) का इस्तेमाल करती है।

रेनालिक्स - आरएक्सटी 21 ने रेनालिक्स को यूरोपीय यूनियन (ईयू) सीई सर्टिफिकेशन वाली एडवांस्ड डायलिसिस मशीन बनाने वाली दुनिया की छठी और भारत की पहली कंपनी बना दिया है।

आरएक्सटी 21 के लॉन्च को लेकर रेनालिक्स हेल्थ सिस्टम्स के संस्थापक (फाउंडर) और निदेशक (डायरेक्टर) डॉक्टर श्याम वासुदेव राय ने कहा, हमारी अत्याधुनिक हेमोडायलिसिस मशीन डायलिसिस सुविधा को सस्ती और सुलभ बनाकर किडनी केयर (रेनल केयर) के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाएगी। इससे देश में किडनी हेल्थकेयर से जुड़ेइन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूती मिलेगी।

डायलिसिस सुविधा को मरीजों के घर के पास लाकर, आरएक्सटी 21 क्रॉनिक किडनी डिजीज (सीकेडी) और एंड-स्टेज रेनल डिजीज (ईएसआरडी) मरीजों की बढ़ती संख्या से जुड़ी समस्या का समाधान करेंगे। अपने देश में विकसित हमारी हीमोडायलिसिस मशीन डायलिसिस के खर्च कम करने में बड़े बदलाव लाने वाली भूमिका निभाएगी और इसका हेल्थकेयर सेक्टर पर बेहतर असर देखने को मिलेगा।

स्कोडा ऑटो इंडिया के लिए 2025 होगा 'अब तक का सबसे बड़ा साल', भारत में ग्रोथ को नई रफ्तार देने की तैयारी, ग्राहकों के करीब, भविष्य के लिए तैयार स्कोडा

नईदिल्ली (एजेंसी)। साल 2025 दुनियाभर मेंस्कोडा ऑटोके लिए खास मायने रखता है। जहां कंपनी अपने समृद्ध 130 साल के इतिहास का जश्न मना रही है, वहीं भारत में स्कोडा ऑटो को सफलतापूर्वक 25 साल पूरे हो गए हैं। ग्राहकों के और करीब पहुंचने की रणनीति को आगे बढ़ाते हुएस्कोडा ऑटो इंडियाने भारतीय बाजार में अपनी मौजूदगी को और मजबूत बनाने के लिए कई अहम ब्रांड, प्रॉडक्ट, नेटवर्क और ग्राहक-केंद्रित पहलों की रूपरेखा तैयार की है। इस मौके परस्कोडा ऑटो इंडियाके ब्रांड डायरेक्टर

आशीष गुप्ता ने कहा, यूरोप के बाहर भारत स्कोडा ऑटो के लिए सबसे अहम ग्रोथ मार्केट है। हमारा फोकस एक ऐसा मजबूत और भविष्य के लिए तैयार ब्रांड बनाने पर है, जिसमें उद्देश्य की स्पष्टता, सोच में पारदर्शिता और काम को तेजी से अंजाम देने की क्षमता हो। हमारे प्रॉडक्ट पोर्टफोलियो की आक्रामक रणनीति लगातार बदलती ग्राहकों की जरूरतों और आकांक्षाओं के अनुरूप है, जो हमारे विकास के सफर को गति दे रही है।

उन्होंने आगे कहा, हम अपने ग्राहकों के और करीब आ रहे हैं, अपने नेटवर्क का रणनीतिक रूप से विस्तार कर रहे हैं और गुणवत्ता, सुरक्षा और भरोसे की अपनी विरासत को और मजबूत बना रहे हैं। बिजनेस के हर पहलू में नई ऊर्जा के साथ, 2025 हमारे लिए वह साल होगा जब हम भारत में स्कोडा ब्रांड को और सशक्त बनाकर नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे।

सैमसंग ने बीस्पोक एआई उपकरणों के लिए सैमसंग फाइनेंस+ की पेशकश की, भारतीय उपभोक्ताओं को मिलेगी डिजिटल फाइनेंसिंग की सुविधा

गुरुग्राम: सैमसंग, भारत के सबसे बड़े कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड, ने अपने लोकप्रिय डिजिटल लेंडिंग प्रोग्राम, सैमसंग फाइनेंस+ का विस्तार किया है। यह प्रोग्राम लोगों को सैमसंग के बीस्पोक एआई उपकरणों आसानी से खरीदने में मदद करता है। बैंगलोर और दिल्ली में सैमसंग आरएंडडी इंस्टीट्यूट द्वारा बनाया गया, सैमसंग फाइनेंस+ फाइनेंसिंग का पूरी तरह डिजिटल और आसान अनुभव देता है, जिसमें 15 मिनट में लोन मिल जाता है। यह प्रोग्राम बिना कागजी कार्रवाई के तेज़ी और आसानी से लोन प्रदान करता है। फाइनेंसिंग से ग्राहकों को सैमसंग के नए एआई-इनेबल्ड उपकरण जैसे रेफ्रिजरेटर्स, वाशिंग मशीनें और एयर कंडिशनर्स आसानी से मिलेंगे। सैमसंग फाइनेंस+ को वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन किया गया है ताकि ग्राहकों को कम से कम कागजी कार्रवाई में फौरन लोन स्वीकृति मिल सके। सैमसंग फाइनेंस+ के लोन डीएमआई फाइनेंस जैसे बड़े वित्तीय संस्थानों के साथ मिलकर दिए जाते हैं, जो डिजिटल लोन में माहिर हैं, ताकि ग्राहकों को तेज़ और सुगम अनुभव मिले। गुफरान आलम, वाइस प्रेसिडेंट, डिजिटल अप्लायंसेज, सैमसंग इंडिया ने कहा, सैमसंग में, हम पूरे भारत में

उपभोक्ताओं तक प्रीमियम टेक्नोलॉजी पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। सैमसंग फाइनेंस+ हमारी इस सोच का प्रमाण है। डिजिटल नवाचार और आसान पहुंच के साथ, हम फाइनेंसिंग की प्रक्रिया को सरल बना रहे हैं और वित्तीय समावेशन बढ़ा रहे हैं, ताकि उपभोक्ता हमारे बीस्पोक एआई उपकरणों, जैसे रेफ्रिजरेटर, वॉशिंग मशीन और एयर कंडीशनर की मदद से अपनी लाइफस्टाइल को और बेहतर बना सकें।

इसुजु मोटर्स इंडिया का आई-केयर मानसून सर्विस कैंप 16 जून से

इसुज़ु के सभी अधिकृत डीलर सर्विस आउटलेट्स पर उपलब्ध

इसुज़ु अपने ग्राहकों को बेमिसाल सेवा और स्वामित्व अनुभव प्रदान करने के अपने संकल्प पर कायम है और इसी संकल्प को मजबूती देने का प्रयास करते हुए, इसुज़ु मोटर्स इंडिया की ओर से अपने इसुजु डी-मैक्स पिक-अप और एसयूवी की रेंज के लिए देश भर में 'इसुजु आई-केयर मानसून कैंप' का आयोजन किया जाएगा। इस सर्विस कैंप का उद्देश्य ग्राहकों को आकर्षक फायदों के साथ-साथ रखरखाव के लिए एहतियाती जाँच की सुविधा उपलब्ध कराना है, ताकि पूरे देश में सभी ग्राहकों को इस मौसम में बिना परेशानी के शानदार ड्राइविंग का अनुभव मिल सके।

'इसूज़ू केयर' की पहल के तहत, 16 से 21 जून, 2025 (दोनों दिन शामिल है) के बीच देश भर में इसूज़ू के सभी अधिकृत डीलर सर्विस आउटलेट्स पर मॉनसन कैंप का

आयोजन किया जाएगा। इस दौरान ग्राहक अपने वाहनों के लिए खास ऑफर्स के साथ-साथ शानदार फायदों का भी आनंद ले सकते हैं।

कैंप में आने वाले ग्राहकों मुफ़्त में 37 पॉइंट्स की पूरी जाँच, लेबर चार्ज पर 10 प्रतिशत की छूट, पार्ट्स पर 5 प्रतिशत की छूट, ल्यूब और फ्लूइड पर 5 प्रतिशत की छूट, रिटेल आरएसए की खरीद पर 10 प्रतिशत की छूट एवं मुफ़्त 'आरईजीईएन' सुविधायें कुछ नियम एवं शर्तों सहित शामिल है ।

मानसून कैंप का आयोजन रायपुर इसूज़ू सहित अहिल्यानगर, अहमदाबाद, अंबिकापुर, बेंगलुरु, बरेली, बाड़मेर, बठिंडा, भांडुप, भोपाल, भुवनेश्वर, बीकानेर, बिलासपुर, कालीकट, छत्रपति संभाजी नगर, चेन्नई, कोयंबटूर, डिब्रूगढ़, दीमापुर, दुर्गापुर, एर्नाकुलम, गांधीधाम, गोरखपुर, गुडग़ांव, गुवाहाटी, हिसार, हावड़ा, हुबली, हैदराबाद, इंदौर, ईटानगर, जयगांव, जयपुर, जालंधर, जम्मू, जोधपुर, कडप्पा, करनाल, खम्मम, कोलाहलपुर। कोलकाता, कोट्टायम, कुरनूल, लेह, लखनऊ, लुधियाना, मदुरै, मंडी, मैंगलोर, मेहसाणा, मोहाली, मैसूर, नागपुर, नासिक, नेल्लोर, नेरुल, नई दिल्ली, नोएडा, पटना, पुणे, राजमुंदरी, राजकोट, रत्नागिरी, सतारा, शिवमोग्गा, सीकर, सिलीगुड़ी, सोलापुर, श्रीनगर, सूरत, त्रिशूर, तिरुनेलवेली, तिरूपति, त्रिची, त्रिवेन्द्रम, वडोदरा, विजयवाड़ा और विशाखापत्तनम में स्थित सभी अधिकृत सर्विस आउटलेट्स पर किया जाएगा।

ग्राहक सर्विस बुकिंग के लिए अपने नजदीकी इसूज़ू डीलर आउटलेट पर कॉल कर सकते हैं या https://www.isuzu.in/servicebooking.html पर भी बुकिंग कर सकते हैं। ग्राहक अधिक जानकारी के लिए 1800 4199 188 (टोल-फ्री) पर संपर्क कर सकते हैं।

बालिका वधु की अविका गौर और उनके मंगेतर मिलिंद चंदवानी ने कलर्स के नए रियलिटी शो 'पति पत्नी और पंगा' के लिए कहा 'हां!'

नईदिल्ली। क्या आपको बालिका वधू की छोटी आनंदी याद है - वह बाल वधू जिसने उस समय हमारा दिल चुरा लिया था? अब वही अविका गौर पूरी तरह से बड़ी हो चुकी हैं और प्यार में सिर से पांव तक डूबी हुई हैं! टेलीविजन की यह चहेती कलाकार अब उस चैनल पर वापसी कर रही हैं जिसने उन्हें घर-घर का नाम बना दिया था—कलर्स। लेकिन इस बार, वह अकेली नहीं आ रही हैं। इस खास मौके पर उनके साथ हैं उनके मंगेतर और सामाजिक कार्यकर्ता मिलिंद चंदवानी। यह प्यारा जोड़ा कलर्स के बिल्कुल नए रियलिटी शो 'पति पत्नी और पंगा' में नजर आने वाला है—एक ऐसा शो जो प्यार, हंसी और रिश्तों की जादुई उलझनों का खूबसूरत उत्सव है। अभी हाल ही में जब अविका ने अपने लंबे समय से साथी मिलिंद के साथ रोका सेरेमनी की ड्रीमी तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा कीं, तो इंटरनेट पर जैसे भावनाओं की बाढ़ आ गई। फैन्स ने ऑ कहकर अपना प्यार जताया और अब समझ में आता है क्यों—वह तो बस एक झलक थी, असली कहानी अब सामने आ रही है। 'पति पत्नी और पंगा' उन छोटे-छोटे लम्हों को उजागर करेगा जो किसी भी रिश्ते को मजबूत बनाते हैं—एक साथ की गई कोशिशें, साझा की गई मुस्कानें, रोज़ाना की छोटी-छोटी जीतें।

आईसीआईसीआई बैंक और टाटा मेमोरियल सेंटर ने विशाखापट्टनम में उन्नत कैंसर केयर ब्लॉक की आधारशिला रखी

विशाखापट्टनम: आईसीआईसीआई बैंक ने टाटा मेमोरियल सेंटर (TMC) के साथ साझेदारी में आज विशाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश स्थित होमी भाभा कैंसर अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र (HBCHRC) में एक नए भवन के निर्माण की शुरुआत की घोषणा की। बैंक ने लगभग 3.9 लाख वर्गफुट क्षेत्र में अत्याधुनिक चिकित्सा तकनीक से युक्त भवन के निर्माण के लिए 550 करोड़ से अधिक की राशि समर्पित की है। निर्माणाधीन आठ मंज़िला भवन — आईसीआईसीआई फाउंडेशन ब्लॉक फॉर चाइल्ड एंड ब्लड कैंसर — प्रति वर्ष लगभग 3,000 मरीजों का उपचार करेगा। वर्तमान में एचबीसीएचआरसी, विशाखापट्टनम की क्षमता 6,200 मरीजों की है। यह नया भवन पूर्वी भारत के सबसे बड़े विशेषीकृत कैंसर उपचार केंद्रों में से एक होगा, जिसमें 215 से अधिक बेड होंगे। इसके 2027 तक पूर्ण होने की संभावना है, जो अनुमोदनों के अधीन है। इस परियोजना का संचालन

आईसीआईसीआई बैंक की सीएसआर शाखा, आईसीआईसीआई फाउंडेशन फॉर इनक्लूसिव ग्रोथ द्वारा किया जाएगा।

इस भवन की आधारशिला आईसीआईसीआई बैंक के चेयरमैन श्री प्रदीप कुमार सिन्हा ने रखी। इस अवसर पर श्री संदीप बत्रा, कार्यकारी निदेशक, आईसीआईसीआई बैंक; और डॉ. सुदीप गुप्ता, निदेशक, टाटा मेमोरियल सेंटर, मुंबई भी उपस्थित थे। श्री सिन्हा ने अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में एन.के. राव ऑडिटोरियम का भी उद्घाटन किया। आईसीआईसीआई फाउंडेशन ने नए ऑडिटोरियम के लिए बुनियादी ढांचे और उपकरणों के साथ टीएमसी को सपोर्ट दिया है। आईसीआईसीआई बैंक के चेयरमैन श्री प्रदीप कुमार सिन्हा ने कहा, हमें कैंसर देखभाल के लिए टीएमसी के साथ साझेदारी करने पर गर्व है, जो देश में महत्वपूर्ण स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की हमारी फिलोस्फी के अनुरूप है। यह परियोजना जरूरतमंद व्यक्तियों के लिए सुलभ और उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा देखभाल को सक्षम करने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह प्रोजेक्ट बाल और रक्त कैंसर के लिए पूर्वी गलियारे में सबसे बड़े प्रोजेक्ट में से एक है। इसके जरिये आंध्र प्रदेश और आसपास के पूर्वी राज्यों के रोगियों की सेवा की जाएगी, जिससे कैंसर के इलाज की बढ़ती ज़रूरत को पूरा करने में मदद मिलेगी। इस अवसर पर, आईसीआईसीआई बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री संदीप बत्रा ने कहा, आईसीआईसीआई बैंक में, स्वास्थ्य सेवा हमारे सीएसआर प्रयासों का एक प्रमुख हिस्सा है। दो वर्ष पूर्व हमने टाटा मेमोरियल सेंटर के साथ साझेदारी कर ?1,200 करोड़ की प्रतिबद्धता के साथ विशाखापट्टनम, नवी मुंबई और न्यू चंडीगढ़ में तीन नए कैंसर ब्लॉक्स के निर्माण की घोषणा की थी। टीएमसी की नवीनतम आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अब हमने इस प्रतिबद्धता को ?1,800 करोड़ तक बढ़ा दिया है। ये ब्लॉक कुल मिलाकर 10.7 लाख वर्गफुट क्षेत्र में फैले होंगे, जिनमें अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाएं और अनुसंधान इकाइयाँ होंगी। इनमें 19 स्ड्डह्लह्य और 555 बेड होंगे। पूर्ण रूप से कार्यशील होने के पश्चात ये क्षेत्रीय केंद्र के रूप में कार्य करेंगे। डॉ. उमेश महंतशेट्टी, निदेशक, होमी भाभा कैंसर अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र, विशाखापत्तनम ने कहा: हम आईसीआईसीआई फाउंडेशन के इस उदार योगदान के लिए हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। यह सहयोग विशाखापत्तनम क्षेत्र में पीडियाट्रिक और हेमेटोलिम्फोइड कैंसर के उपचार और अनुसंधान को एक नई दिशा देगा। आईसीआईसीआई फाउंडेशन के साथ हमारी यह साझेदारी यह दर्शाती है कि जब संस्थान एकजुट होकर कार्य करते हैं, तो हम न केवल अत्याधुनिक उपचार उपलब्ध करा सकते हैं।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शुक्रवार 13 जून 2025

जरूरतमंद स्कूलों में प्राथमिकता के आधार पर शिक्षकों की हुई नियुक्ति

रायपुर (विसं)। राज्य शासन द्वारा शिक्षा व्यवस्था को बेहतर और समावेशी बनाने के लिए शालाओं और शिक्षकों का युक्तियुक्तकरण किया जा रहा है। शिक्षक विहीन शालाओं में शिक्षकों की पदस्थापना की जा रही है। अब बच्चों को स्कूल खुलने का इंतजार है। अब वह नए जोश और उमंग से स्कूल में आएंगे और क्यों न आए क्योकि अब उन्हें नये शिक्षक मिलने वाला है। जहां कई वर्षों से कोई शिक्षक नही था वहां अब बच्चों और शिक्षकों की आवाज गूंजेगी। दुर्ग जिले के शासकीय प्राथमिक शाला अगार में बच्चों की दर्ज संख्या 85 है जहां एक भी शिक्षक कार्यरत नही थे, परंतु काउंसिलिंग के बाद अब वहां 3 शिक्षकों की पदस्थापना की गई है।

संक्षिप्त समाचार

सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने अहमदाबाद विमान हादसे पर जताया गहरा शोक

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर से सांसद एवं वरिष्ठ भाजपा नेता श्री बृजमोहन अग्रवाल ने अहमदाबाद में हुए दर्दनाक विमान हादसे पर गहरा दुख व्यक्त किया है। इस भीषण दुर्घटना में गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री विजय रूपाणी जी समेत कई लोगों की दुखद मृत्यु हो गई। सांसद श्री अग्रवाल ने कहा कि श्री विजय रूपाणी जी का असामयिक निधन भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्र की राजनीति के लिए अपूरणीय क्षति है। वे न सिर्फ एक कुशल प्रशासक थे, बल्कि जनसेवा को समर्पित जीवन जीने वाले संवेदनशील नेता भी थे।

उनका सरल व्यक्तित्व और कर्मठता सदैव प्रेरणादायी रहेगी। उन्होंने हादसे में जान गंवाने वाले सभी मृतकों के प्रति भी गहरी संवेदना व्यक्त की और ईश्वर से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्माओं को अपने श्रीचरणों में स्थान दें और शोक संतप्त परिजनों को इस कठिन समय को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। बृजमोहन अग्रवाल ने केंद्र सरकार एवं संबंधित एजेंसियों से हादसे की उच्चस्तरीय जांच की मांग करते हुए कहा कि इस दुर्घटना के पीछे के कारणों को शीघ्र स्पष्ट किया जाना चाहिए, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाएं दोबारा न हों।

राष्ट्रीय कार्यशाला एनजीओ मीट-2025 का भव्य आयोजन मैट्स यूनिवर्सिटी में, देश की अनेक प्रसिद्ध समाजसेवी संस्थाएं लेंगी हिस्सा

रायपुर (विश्व परिवार)। मैट्स विश्वविद्यालय के सोशल वर्क विभाग द्वारा समाज सेवी संस्था भावना फाउंडेशन के सहयोग से 14 जून को एनजीओ मीट-2025 राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इस राष्ट्रीय कार्यशाला में छत्तीसगढ़ राज्य सहित देश की अनेक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय सामाजिक संस्थाएं और संगठन हिस्सा ले रहे हैं। इस कार्यशाला में समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली सामाजिक संस्थाओं को पुरस्कृत भी किया जाएगा। मैट्स विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. दीनानाथ यादव ने बताया कि एनजीओ मीट-2025 का आयोजन यहाँ पंडरी स्थित विश्वविद्यालय परिसर के इम्पैक्ट सेंटर में सुबह 10 बजे से किया जाएगा। इस राष्ट्रीय कार्यशाला को कराने का उद्देश्य समाज सेवी संस्थाएँ, उच्च शिक्षा संस्थान और सरकारी संगठन किस तरह एक मंच में आकर समाज सेवा की नई मिसाल पेश करें और विकसित भारत 2047 के स्वप्न को साकार करने में अपना अनमोल योगदान दे सकें। इस राष्ट्रीय कार्यशाला की थीम शिक्षार्थ से सेवार्थ तक निर्धारित की गई है। इस कार्यशाला की मुख्य अतिथि महिला सशक्तिकरण की मिसाल समाजसेवी पद्श्री फूलबासन यादव तथा विशेष अतिथि छत्तीसगढ़ राज्य बाल संरक्षण अधिकार आयोग की अध्यक्ष डॉ. वर्णिका शर्मा होंगी। इस कार्यक्रम में प्रदेश के जिन संगठनों ने भागीदारी के लिए सहमति दी है उनमें यूनिसेफ, बचपन बचाओ आंदोलन, अल्ट्राटेक फाउंडेशन, अदाणी फाउंडेशन, एसईसीएल बिलासपुर, ग्रीन आर्मी रायपुर, बैक टू नेचर सोसायटी, एलायंस बिहेवियर चेंज, संभावना फाउंडेशन, नि:शक्तजन कल्याण सेवा समिति, हरियाली फाउंडेशन, पारस इंस्टीट्यूट रायपुर सहित 60 से भी अधिक प्रसिद्ध समाज सेवी संस्थाएं हिस्सा ले रही हैं। इस कार्यक्रम में मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति श्री गजराज पगारिया, महानिदेशक श्री प्रियेश पगारिया, कुलपति प्रो. के.पी. यादव, कुलसचिव श्री गोकुलानंदा पंडा सहित विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, प्राध्यापकगण, विद्यार्थीगण, समाज सेवी संस्थाओं के पदाधिकारीगण व गणमान्य नागरिक प्रमुख रूप से उपस्थित रहेंगे।

हम सभी की साझी भागीदारी से ही पर्यावरण संरक्षण का संकल्प होगा पूरा : विष्णुदेव साय

मुख्यमंत्री साय फाइट अगेंस्ट ग्लोबल वार्मिंग कैंपेन कार्यक्रम में हुए शामिल

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री साय ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा, विकास का मूलमंत्र है और यह राष्ट्र के समग्र विकास की प्रारंभिक तथा अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी है। उन्होंने कहा कि निजी शिक्षण संस्थानों ने भी शिक्षा के विस्तार में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। श्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने देश को वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाने का जो लक्ष्य निर्धारित किया है, उसे प्राप्त करने में हम सभी की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। राज्य सरकार ने इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विकसित छत्तीसगढ़ का विज़न डॉक्यूमेंट तैयार किया है और इस दिशा में निरंतर प्रयासों को गति प्रदान की जा रही है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि 25 वर्ष का छत्तीसगढ़ आज अपनी रजत जयंती मना रहा है और इस यात्रा में राज्य ने चहुंमुखी विकास की दिशा में ऐतिहासिक उपलब्धियाँ हासिल की हैं। उन्होंने कहा कि आज छत्तीसगढ़ में आईआईटी, आईआईएम, एम्स जैसे प्रतिष्ठित केंद्रीय संस्थान कार्यरत हैं, जो राज्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग की गंभीर चुनौती से जूझ रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने वर्ष 2070 तक नेट ज़ीरो कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य तय किया है, जिसकी दिशा में देश ने तीव्र गति से कदम बढ़ाए हैं। छत्तीसगढ़ ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा देने की दिशा में अग्रसर है। राज्य की आकर्षक नई औद्योगिक नीति के तहत केवल ऊर्जा क्षेत्र में ही तीन लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्राप्त हुए हैं। मुख्यमंत्री ने जानकारी दी कि राज्य में वृक्षारोपण का विशेष अभियान चलाया जा रहा है और विगत वर्ष चार करोड़ पौधे रोपे गए थे। राज्य सरकार एक पेड़ माँ के नाम और पीपल फॉर पीपुल जैसे नवाचार कार्यक्रमों को निरंतर जारी रखेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमें नौनिहालों में पर्यावरण चेतना का विकास करना चाहिए, जिससे वे स्वच्छ, सुंदर और सुरक्षित भविष्य की नींव रख सकें। उन्होंने इस अभियान में भाग ले रहे सभी शिक्षकों और आयोजकों की सराहना की और कहा कि सामाजिक भागीदारी से ही हम शुद्ध हवा, निर्मल जल और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित कर सकते हैं। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री साय ने संघ द्वारा आने वाले वर्षों में 11 लाख पीपल के वृक्षारोपण के संकल्प की सराहना की।

कार्यक्रम में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल, अशासकीय विद्यालय संचालक संघ के प्रदेश अध्यक्ष श्री सुबोध राठी, सचिव श्री मनोज पाण्डेय तथा अन्य प्रतिनिधिगण उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि यह कार्यक्रम छत्तीसगढ़ राज्य अशासकीय विद्यालय संचालक संघ एवं छत्तीसगढ़ राज्य गौ संरक्षण एवं संवर्धन समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया था।

रामगढ़ मेले को बजट में शामिल कर रेगुलर आयोजन की होगी व्यवस्था : वित्त मंत्री

वित्त मंत्री ओ.पी. चौधरी के मुख्य आतिथ्य में रामगढ़ महोत्सव का भव्य समापन

रायपुर। दो दिवसीय रामगढ़ महोत्सव का भव्य समापन गुरुवार को वित्त मंत्री श्री ओपी चौधरी के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। सरगुजा और बस्तर जैसे अंचलों को सरकार की प्राथमिकता बताते हुए उन्होंने कहा अपने पहले बजट में मैंने इन क्षेत्रों के विकास के लिए विशेष प्रावधान किए हैं और भविष्य में भी इन क्षेत्रों को हरसंभव सहायता दी जाएगी। उन्होंने कहा कि रामगढ़ की ऐतिहासिकता और सांस्कृतिक महत्व को देखते हुए इस महोत्सव को बजट में शामिल कर एक नियमित वार्षिक आयोजन के रूप में स्थापित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि महाकवि कालिदास द्वारा यहीं 'मेघदूतम' की रचना की गई थी, यह स्थल हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। अपने उद्बोधन की शुरुआत मंत्री श्री चौधरी ने भारत माता, छत्तीसगढ़ महतारी, रामगढ़ और महाकवि कालिदास के जयकारों के साथ की। उन्होंने कहा, यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि मैं रामगढ़ महोत्सव में सम्मिलित हुआ। सोलह वर्ष पूर्व जब मैं सरगुजा जिला पंचायत में सीईओ था, तब रामगढ़ आना हुआ था। आज फिर वही आत्मीयता और अपनापन अनुभव हो रहा है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में बनी सरकार ने बीते डेढ़ वर्षों में जनहित के कई ऐतिहासिक निर्णय लिए हैं। सरकार ने 18 लाख गरीब परिवारों को प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत किए हैं, 70 लाख बहनों को महतारी वंदन योजना के अंतर्गत हर माह 1000 रूपए की सहायता राशि दी जा रही है।

महापौर चौबे, विधायक पुरंदर मिश्रा, आयुक्त विश्वदीप से पंडरी कपड़ा बाजार के व्यापारियों ने नगर निगम में आकर चर्चा की

व्यापारियों ने दस्तावेज प्रस्तुत कर परीक्षण करवाने का आग्रह किया

अधिकारियों ने बताया- सीलबंदी कार्यवाही नियमानुसार की गई है

रायपुर (विश्व परिवार)। आज राजधानी शहर रायपुर के पंडरी कपडा बाजार के संबंधित 19 व्यापारीगण नगर निगम रायपुर मुख्यालय महात्मा गांधी सदन के महापौर कक्ष में आए एवं उन्होने महापौर मीनल चौबे, उत्तर विधायक पुरंदर मिश्रा, आयुक्त विश्वदीप से चर्चा कर दस्तावेज प्रस्तुत करते हुए सीलबंदी कार्यवाही के प्रकरण में परीक्षण करवाने का आग्रह किया। इस दौरान महापौर कक्ष में नगर निवेशक आभास मिश्रा, जोन 2 जोन कमिश्नर डॉ. आर.के. डोंगरे, कार्यपालन अभियंता आशुतोष सिंह की उपस्थिति रही। अधिकारियों ने जानकारी दी कि नगर निगम ने सीलबंदी की कार्यवाही नियमानुसार की है।

महापौर मीनल चौबे ने कहा कि व्यापारियों द्वारा वर्ष 2025 में कराये गये नियमितिकरण में दुकान के दोनो ओर प्रवेश द्वार खोलने की अनुमति व्यापारियों को नहीं दी गई है। महापौर ने व्यापारियों से शहर में अच्छी व्यवस्था देने जनहित में सहयोग देने कहा।

रायपुर उत्तर विधायक पुरंदर मिश्रा ने व्यापारियों से कहा कि सीलबंदी प्रकरण में प्रशासन ने नियमानुसार कार्यवाही की है। वे जनप्रतिनिधि विधायक है एवं इस प्रकरण में वे व्यापारियों के साथ खड़े है। उन्होने रायपुर शहर को सुन्दर बनाकर अच्छी व्यवस्था देने रायपुर नगर निगम को सहयोग देने कहा।

उत्तर विधायक ने व्यापारियों से कहा कि वे इसमें नगर निगम रायपुर को सहयोग करें। उनकी अन्य मांगो पर वे पहल कर नगर निगम एवं प्रशासन के अधिकारियों से चर्चा कर मांगो को शीघ्र पूर्ण कर अच्छी व्यवस्था देने का आवश्यक कार्य सभी साथ मिलकर करेंगे।

सीए छात्रों का राष्ट्रीय कांफ्रेंस 'समर्थ', 14-15 जून को उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा होंगे विशिष्ट अतिथि

रायपुर (विश्व परिवार)। सीए छात्रों के लिए राष्ट्रीय कांफ्रेंस 'समर्थ' का आयोजन पं.दीन दयाल ऑडीटोरियम, रायपुर में दिनांक 14 और 15 जून को आईसीएआई रायपुर ब्रांच, सिकासा रायपुर, भिलाई, बिलासपुर, रायगढ़ द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा होंगे। इस राष्ट्रीय कांफ्रेंस में देश भर के लगभग दो हजार सीए छात्र भाग ले रहे हैं।

कांफ्रेंस डायरेक्टर सीए पंकज शाह, आईसीएआई (सीआईआरसी) रायपुर ब्रांच के अध्यक्ष सीए विकास गोलछा, सिकासा अध्यक्ष सीए ऋषिकेश यादव तथा सीए संजय बिलथरे की अगुआई में सीए छात्रों के प्रतिनिधि मंडल ने उपमुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ विजय शर्मा से भेंट कर राष्ट्रीय कांफ्रेंस के लिए आमंत्रित किया।

14 और 15 जून को होने वाले इस राष्ट्रीय कांफ्रेंस में उद्घाटन और आभार सत्र के अलावा कुल 10 सेशन होंगे जिसमें चार कौशल उन्नयन सत्र तथा चार ज्ञान सत्र होंगे इसके अलावा दो विशेष सत्र भी होंगे जिसमें प्रथम सेशन में बोर्ड ऑफ स्टडीज के चेयरमैन(ओ) सीए (डॉ)रोहित रोआटिया सीए छात्रों को संबोधित करेंगे दूसरा सेशन वर्क लाइफ बैलेंस पर होगा जिसमें डॉ तनुश्री नेरल सीए छात्रों को संबोधित करेंगी।

सभी सत्रों में अपने अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठित और अनुभवी वक्ताओं को आमंत्रित किया गया है जिनमें इंदौर से सीए धवल कोठारी, मुंबई से सीए अनिषा जैन, दिल्ली से सीए अवप्रीत नंदा तथा सीए इंदरजीत कौर भामरा, कोलकाता से सीए ईशा जायसवाल, मुंबई से सीए भवन बोराना, सीए शुभम सिंघल के साथ ही रायपुर से सीए भ्रमर जैन, सीए जी एस अग्रवाल, सीए जी जी अग्रवाल तथा सी ए बी एल अग्रवाल वक्ता के रूप में शामिल होकर अपना अनुभव और मार्गदर्शन सीए छात्रों को देंगे।

स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ बनाने यूनिसेफ, डब्ल्यूएचओ, एम्स सहित 5 संस्थाओं के साथ ऐतिहासिक एमओयू

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) द्वारा टीकाकरण कार्यक्रमों को मिलेगा तकनीकी एवं रणनीतिक सहयोग

रायपुर (विश्व परिवार)। स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल के मार्गदर्शन में स्वास्थ्य विभाग ने प्रदेश में स्वास्थ्य सेवा तंत्र को मजबूत, समावेशी और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप विकसित करने की दिशा में ऐतिहासिक कदम उठाते हुए 05 प्रमुख राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। नवा रायपुर स्थित महानदी भवन में आयोजित कार्यक्रम में स्वास्थ्य, परिवार कल्याण एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा विभिन्न सहयोगी संस्थाओं के साथ साझा दायित्वों और लक्ष्यों पर सहमति बनी। कार्यक्रम के दौरान सचिव, लोक स्वास्थ्य श्री अमित कटारिया, आयुक्त सह संचालक डॉ प्रियंका शुक्ला, संचालक महामारी नियंत्रण डॉ एस. के. पामभोई, संबंधित स्वास्थ्य कार्यक्रमों के नोडल/उपसंचालक व सभी सहयोगी संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

विदित हो कि प्रदेश में स्वास्थ्य संकेतकों में निरंतर सुधार लाने एवं योजनाओं तथा परियोजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए राज्य शासन ने एक संगठित एवं समन्वित तंत्र के रूप में छत्तीसगढ़ साथी पहल को प्रारंभ किया है। इसके सुचारू संचालन के लिए शासन द्वारा एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया गया है, जिसका उद्देश्य स्वास्थ्य क्षेत्र में कार्यरत विविध राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सहयोगी संस्थाओं के बीच समन्वय स्थापित करना है। यह समिति एक ऐसा संस्थागत मंच प्रदान करती है, जिसके माध्यम से साझेदार संगठन अपनी विशेषज्ञता, अनुभव और तकनीकी सुझाव सीधे विभाग के समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं।

पुलिस महानिरीक्षक ने जिला रायपुर के पुलिस अधिकारियों की ली बैठक

पदोन्नत अधिकारियों के कंधे पर लगाया अशोक स्तंभ एवं स्टार

रायपुर (विश्व परिवार)। बुधवार को पुलिस महानिरीक्षक रायपुर रेंज रायपुर अमरेश मिश्रा द्वारा सिविल लाईन स्थित सी-4 भवन के सभाकक्ष में दो पालियों में बैठक आयोजित की गई। उक्त बैठक में पुलिस उप महानिरीक्षक एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ. लाल उमेद सिंह व जिले के समस्त राजपत्रित अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रथम पाली में पुलिस महानिरीक्षक द्वारा जिला रायपुर के उप पुलिस अधीक्षक श्री अमन कुमार रमन कुमार झा (भा.पु.से.) एवं उप पुलिस अधीक्षक श्री अजय वर्मा (भा.पु.से.) के कंधे पर अशोक स्तंभ लगाकर एवं कैप पहनाकर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के पद पर तथा निरीक्षक श्री नरेश पटेल, श्रीमती श्रुति सिंह, सुश्री मंजूलता राठौर एवं सुश्री लता चौरे के कंधे पर स्टार लगाकर एवं कैप पहनाकर उप पुलिस अधीक्षक के पद पर पदोन्नति की प्रक्रिया पूर्ण कर सभी को शुभकामनाएं दी गई।

द्वितीय पाली में पुलिस महानिरीक्षक द्वारा समस्त पुलिस राजपत्रित अधिकारियों द्वारा किये गये कार्यो की समीक्षा कर एक वर्ष से अधिक अवधि के लंबित अपराध, गंभीर अपराध के निराकरण, तथा सीसीटीएनएस, आई-4 सी के समस्त पोर्टलो में एंट्री के साथ ही एनडीपीएस, पशु तस्करी एवं आबकारी एक्ट के प्रकरणों में फाइनेंसियल इन्वेस्टिगेशन कर अपराध से अर्जित संपत्ति का अटैचमेंट एवं जप्त वाहन के राजसात एवं नीलामी की कार्यवाही तथा आदतन अपराधियों के विरुद्ध पिट एनडीपीएस की कार्यवाही करने एवं शहर की यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ करने एवं दुर्घटनाओं में कमी लाने हेतु शराब पीकर वाहन चलाने वाले, तेज रफ्तार वाहन चलाने वाले, अवैध पार्किंग, बिना हेलमेट एवं अवैध पार्किंग के विरूद्ध अभियान चलाकर कार्यवाही करने के निर्देश देने के साथ ही रैंक वार चुनौतियों को स्वीकार कर बेहतर पुलिसिंग के निर्देश दिये गये। सभी थानों के सी.सी.टी.एन.एस. आरक्षकों सहित थाना स्टॉफ को विवेचना, सायबर अपराध में उपयोगी आई-4-सी के सभी पोर्टल की जानकारी हेतु प्रशिक्षण सत्र आयोजित कर जानकारी दी गई साथ ही सभी स्टॉफ को पोर्टल फ्रेंडली बनाने के लिए विशेष पहल करने हेतु राजपत्रित अधिकारियों को निर्देशित किया गया।

एनटीपीसी का बैंक ऑफ बड़ौदा के साथ 750 मिलियन अमेरिकी डॉलर का ईसीबी सावधि ऋण समझौता

बैंक ने निभायी नामित लीड अरेंजर और अंडरराइटर की भूमिका

रायपुर (विश्व परिवार)। भारत की सबसे बड़ी बिजली कंपनी और महारत्न पीएसयू, एनटीपीसी लिमिटेड ने 10 साल की डोर-टू-डोर अवधि और 7 साल की औसत परिपक्वता के साथ 750 मिलियन अमेरिकी डॉलर के अनसिक्योर्डबाह्य वाणिज्यिक ऋण (ईसीबी) सिंडिकेटेड सावधि ऋण (500 मिलियन अमेरिकी डॉलर का बेस इश्यू और 250 मिलियन अमेरिकी डॉलर का ग्रीनशू विकल्प) प्राप्त करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने 500 मिलियन अमेरिकी डॉलर के लेन-देन के लिए नामित लीड अरेंजर और अंडरराइटर की भूमिकानिभायी, जबकि 250 मिलियन अमेरिकी डॉलर के ग्रीनशू हिस्से के लिए एचडीएफसी बैंक नामित लीड अरेंजर और बुकरनर रहा है। गांधीनगर स्थित गिफ्ट सिटी में बैंक ऑफ बड़ौदा और एचडीएफसी बैंक की आईएफएससी बैंकिंग इकाइयों (आईबीयू) के माध्यम सेयह डील निष्पादित की गई।

इस सुविधा से प्राप्त आय का उपयोग एनटीपीसी के मौजूदा या नए क्षमता संवर्धन कार्यक्रमों के लिए पूंजीगत व्यय को फायनांस किया जाएगा, जिसमें फ्लू गैस डिसल्फराइज़ेशन (विसल्फरीकरण) परियोजनाएं, नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएं (हाइड्रो-आधारित परियोजनाएं समेत)और भारतीय रिज़र्व बैंक के ईसीबी दिशानिर्देशों के तहत अनुमतिप्राप्त अंतिम उपयोग या अन्य आवश्यकताओं के अनुरूपपूंजीगत व्यय उद्देश्यों के लिए मौजूदा बाह्य वाणिज्यिक उधारी (ईसीबी) का रि-फायनांसशामिलहै।

यह महत्वपूर्ण समझौता बड़े पैमाने पर क्रॉस-बॉर्डर फायनांस उपलब्ध कराने के क्षेत्र में बैंक ऑफ़ बड़ौदा की अग्रणी भूमिका को रेखांकित करता है और विश्व स्तरीय वित्तीय समाधानों के साथ भारत के बुनियादी इंफ्रास्ट्रक्चर और ऊर्जा क्षेत्रों कोसहयोग प्रदान करने की हमारी सतत प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

एनटीपीसी लिमिटेड के निदेशक (फायनांस) श्री जयकुमार श्रीनिवासन ने इस अवसर पर बात करते हुए कहा, एनटीपीसी अपने ऊर्जा पोर्टफोलियो के सम्पूर्ण परिवर्धन की ओर बढ़ रही है, जिसका कार्यनीतिक लक्ष्य वर्ष 2032 तक 60 गीगावाट नवीकरणीयऊर्जा क्षमता हासिल करना और अपनी कुल स्थापित क्षमता को 80 गीगावाट से बढ़ाकर 130 गीगावाट करना है। यह महत्वाकांक्षी लक्ष्य संवहनीय ऊर्जा के क्षेत्र में एनटीपीसी की नेतृत्वकारी स्थिति और भविष्य के लिए तैयार ऊर्जा-इकॉसिस्टम के प्रति समर्पण को रेखांकित करता है। हम इस प्रक्रिया में मूल्यवान वित्तीय साझेदारों के रूप में बैंक ऑफ़ बड़ौदा और एचडीएफसी बैंक के दृढ़ सहयोग के लिए आभार व्यक्त करते हैं।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा के कार्यपालक निदेशक, श्री ललित त्यागी ने कहा, हमें इस महत्वपूर्ण ईसीबी समझौते के तहत एनटीपीसी के साथ जुड़ने और उनकी फायनांस संबंधी आवश्यकताओं में सहयोग प्रदान करते हुए खुशी हो रही है। यह डील वैश्विक बुनियादी इंफ्रास्ट्रक्चर के फायनांस के क्षेत्र में बैंक ऑफ़ बड़ौदा की क्षमता को दर्शाता है और साथ ही गिफ्टसिटी के माध्यम से कार्यनीतिक, क्रॉस बॉर्डर फायनांस उपलब्ध कराने के क्षेत्र में हमारी आईएफएससीबैंकिंग इकाई की महत्वपूर्ण भूमिका को भी प्रदर्शित करता है।

एचडीएफसी बैंक के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और क्षेत्रीय प्रमुख- पीएसयू, कॉर्पोरेट बैंकिंग, श्री आशुतोष कुमार ने कहा, यह ईसीबी समझौता न केवल वैश्विक वित्तीय केंद्र के रूप में गिफ्ट सिटी की बढ़ती प्रतिष्ठा को और सुदृढ़ कर रहा है, बल्कि यह कार्यनीतिक साझेदारी के लिहाज से बड़ी उपलब्धि है। एनटीपीसी जैसी महारत्न के साथ की गई इस डीलसे इकॉसिस्टम में विश्वास बढ़ेगा और वित्तीय परिदृश्य में नए अवसर खुलेंगे।

यह समझौता वैश्विक वित्तीय केंद्र के रूप में गिफ्ट सिटी के बढ़ते महत्व को रेखांकित करता है, जो भारत मेंसक्षम, कुशल और वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी ऑफ शोर बैंकिंग समाधान उपलब्ध करवा रही है। बैंक ऑफ़ बड़ौदा उन शुरुआती संस्थानों में है जिन्होने वर्ष 2017 में गिफ्ट सिटी में परिचालन शुरू किया। बैंक की आईएफएससी बैंकिंग इकाई सिंडिकेटेड लोन, ट्रेड फायनांस, ट्रेजरी परिचालन और रिटेल बैंकिंग के क्षेत्र में मजबूत क्षमताओं के साथबैंक के अंतर्राष्ट्रीय परिचालन की तीसरी सबसे बड़ी विदेशी शाखा है, जिसका आईबीयूसे कुल कारोबार मार्च 2025 तक 10 बिलियन अमेरिकी डॉलर को पार कर गया है।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354